मासिक

अध्यात्म संदेश

जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई – पत्रिका

वर्षः 3 । अंकः 18 । पृष्ठः 40 । मूल्यः निःशुल्क । इंदौर–उज्जैन । गुरूवार 1 फरवरी 2024 । माघ/फाल्गुन मास (12), विक्रम संवत् 2080 । इ. संस्करण

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र

editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

प्रेरणा स्रोत
महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी

सलाहकार समिति
महंत बालक नाथ योगी जी
गद्दीनशीन महंत, मठ अस्थल बोहर, रोहतक
संसद सदस्य (लोकसभा), अलवर, राजस्थान
कुलाधिपति, श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय (हरियाणा)

महंत पीर योगी रामनाथ जी
भर्तृहरि गुफा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महंत डॉ. योगी विलासनाथ जी
अध्यक्ष, श्री गुरू गोरक्षनाथ शिव पंचायतन मन्दिर (ट्रस्ट), गाळणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत बालयोगी उमेशनाथ जी
पीठाधीश्वर–वाल्मीकि धाम, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधान सम्पादक
योगी शिवनन्दन नाथ

सम्पादक मंडल
वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. संतोष खन्ना (दिल्ली)
सम्पादक
डॉ. अलका शर्मा (दिल्ली)
उपसम्पादक
श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा (लखनऊ)
सुश्री इंदु सिंह "इन्दुश्री" (मध्य प्रदेश)

ग्राफिक्स
IDEAwave COMMUNICATIONS

प्रकाशक एवं स्वामी
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

- गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
- पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों का है। प्रकाशक, प्रधान संपादक एवं संपादक मंडल इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायित्व नहीं होंगे।
- समस्त विवादों का निस्तारण, मध्य प्रदेश सीमांतर्गत सक्षम न्यायालयों में किया जाएगा।

editor.adhyatmsandesh@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	संपादक की कलम से	डॉ. अलका शर्मा	03
2	भगवान श्रीराम द्वारा....	डॉ. शारदा मेहता	05
3	गुणों पर चर्चा से लाभ	डॉ. निशा नंदिनी भारतीय	08
4	मुक्धिाम : जीवन का सत्य	प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे	09
5	भये प्रकट कृपाला दीन दयाला	डॉ. सन्तोष खन्ना	10
6	भारतीय संस्कृति में वसंत पंचमी	आकांक्षा यादव	13
7	भारतीय गणराज्य के सबसे बड़े...	मंजिरी 'निधि'	15
8	वर्षा बीती सर्दी आई	डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक	16
9	धन्य अयोध्या धाम	डॉ. सुमन मिश्रा	17
10	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा	18
11	भारत	डॉ. अ किर्ति वर्द्धन	20
12	आज के परिप्रेक्ष्य में श्री राम	डॉ. अर्चना प्रकाश	21
13	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला...	अनुराधा उपाध्याय	23
14	मन्दिर फिर वहीं बनाया है!	शीलेन्द्र कुमार वशिष्ठ	24
15	रोम रोम में रचे बसे हैं राम	सुजाता प्रसाद	25
16	मेरे राम	डॉ. विद्यासागर मिश्र 'सागर'	26
17	महान समाज सुधारक स्वामी...	डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम	27
18	शबरी बनकर	व्यग्र पाण्डे	28
19	बच्चे सीखें भगवान श्रीराम...	गौरीशंकर वैश्य विनम्र	29
20	अभिव्यक्त संवेदना की यथार्थवादी...	डॉ. अजय शुक्ला	31
21	जीवन में पश्चाताप से बचना है...	सीताराम गुप्ता	34
22	श्रीकृष्ण कहलाये रणछोड़	सोनल मंजू श्री ओमर	36
23	आह्वान है राम तुम्हारा	चेतना साबला	37
24	ज्योतिष क्या है?	पंडित कैलाशनारायण	38
25	सती का शरीर त्याग	ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र	39
26	प्रकृति स्नैहांक्षण	सच्चिदानंद किरण	40

संपादक की कलम से

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

अध्यात्म संदेश पत्रिका परिवार के समस्त विद्वतवृन्द को जय श्री राम ---

याश्चद्धि त्वं बहुभ्य आ सुता वां आविवासति।
उग्रम तत पत्यते शवं इन्द्रो अंग। (सामवेद-1342)

भावार्थ-जिस प्रकार परमेश्वर अपने स्त्रोताओ को आत्मबल प्रदान करता है। उसी प्रकार राजा भी अपने प्रजा जनों में आत्मविश्वास पैदा करे।

भारतवर्ष में भिन्न भिन्न कालखंडों में सत्ता ने स्वरूप बदलते बदलते वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था को धारण किया। वर्तमान शासन प्रणाली में संविधान प्रदत्त असीमित अधिकारों के कारण प्रधानमंत्री पद नृपतुल्य माना जा सकता है। वेदों के इस मंत्र की कसौटी पर हमारी सरकार पूर्णतः खरी उतरती है। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नही होती।

500 वर्षो के लंबे इंतजार के 22 जनवरी को चिरप्रतीक्षित अयोध्या के नवनिर्मित मंदिर में राम लला की प्राण -प्रतिष्ठा करके माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा न केवल देश विदेश के करोड़ो रामभक्तों के आत्मविश्वास में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि की बल्कि अपने कुशल नेतृत्व का परचम विश्व में लहरा दिया। लाखो लोगो के अथक प्रयास, बलिदान के बाद राम मंदिर के निर्माण जैसे असंभव कार्य को संभव कर दिखाया। अयोध्या में राम की प्राण प्रतिष्ठा कर मानो साक्षात धर्म को मूर्त रूप में स्थापित करके जन- जन को हर्षित, पुलकित, चमत्कृत किया है। राम लला की प्राण-प्रतिष्ठा के दिन पिछला सब कुछ भूला कर सम्पूर्ण वातावरण राममय हो उठा। दसों दिशाएं दिग्दिगंत मानो झूम झूम के कह रही हो -

चौक पुराओ।
मंगल गाओ।
आज मेरे राम अपने घर आये है।
सब मिल दीये जलाओ रे।
अरी कोई काजल लाओ रे।
कोई काला टीका लगाओ रे
धरती अम्बर सजाओ रे।

आज श्री राम अपने घर आये है।
इस मंगल वेला में मंत्रोचार, भजन पूजन, शंखनाद, घंटे घड़ियाल के उच्च स्वर के साथ सनातनियो की अपार श्रद्धा का हिलोरे मारता विशाल महासागर के कारण राम नाम की ऐसी आंधी चली इस कलयुग में होने पर भी सतयुग में होने का भ्रम पैदा करती थी।
30 वर्षो तक राम मंदिर की स्थापना तक मौन व्रत धारण करने वाली सरस्वती देवी की मौन की गूंज के समक्ष नास्तिकता भी नतमस्तक हो उठी। भक्ति का ऐसा ज्वार न पहले कलयुग में देखा न भविष्य में कभी देखा जाएगा।

राम भक्तिरंग से सरोबार सनातनियों के द्वारा उच्च स्वर उच्चरित रामनाम का शंखनाद के स्वर सुनकर विरोधियों के मुख म्लान व विरोध के स्वर भी धूमिल पड़ गए। साथ ही सूर्य यान मिशन की सफलता ने सम्पूर्ण विश्व को स्पष्ट संदेश दे दिया कि आने वाला वक्त केवल भारत का ही होगा।

निरन्तर गतिशील कालचक्र के कारण भीष्म पितामह जयंती, गुप्त नवरात्रि, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जयंती वसंतपंचमी, छत्रपति शिवाजी जयंती, माघी पूर्णिमा, चंद्र शेखर आजाद, शहीद दिवस, विज्ञान दिवस आदि धार्मिक व सामाजिक अनेको पर्वो के सुंदर कलेवर में सुसज्जित, शीत के प्रचंड प्रकोप को कम करते हुए फरवरी मास का सुखद आगमन हुआ। फरवरी के आगमन से शीत ऋतु में सिकुड़ते कुम्हलाए वृक्ष, पादप मानो सर्दी से राहत पाकर खिल उठे है। वृक्षो से झांकते छोटे नव किसलय, वृक्षो पर बौर, हवा में मकरन्द, सर्वत्र रंगबिरंगे पुष्पदलो से सजी धरती, मानो सतरंगी परिधान पहनकर धरती ने खुलकर अंगड़ाई ली है।

अपने समस्त सहयोगी विद्वान विदुषियों के अथक परिश्रम को नमन करते हुए फरवरी मास का नवीनतम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार प्रसन्नता है। आशा है आपकी अपनी ही पत्रिका के प्रति आपका स्नेह उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होगा।

संपादक
डॉ. अलका शर्मा

भगवान श्रीराम द्वारा अपना विराट् स्वरूप दिखाना

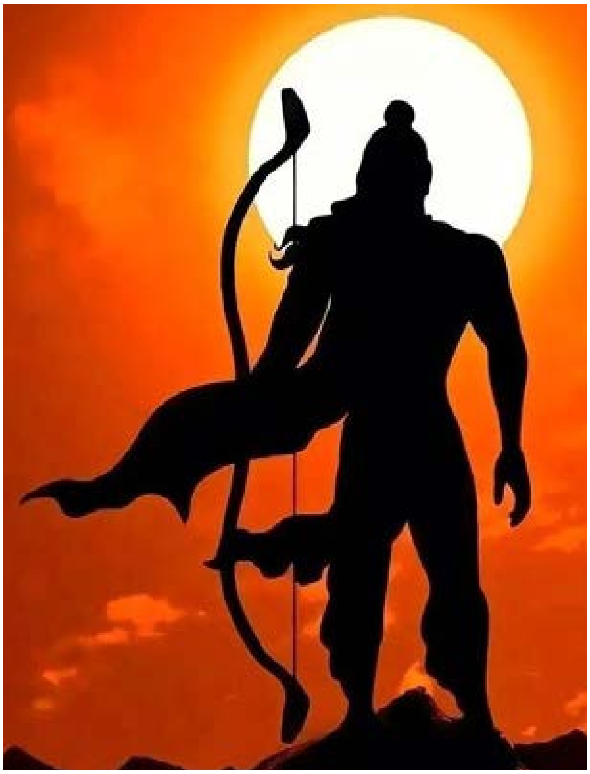

डॉ. शारदा मेहता
स्वतंत्र लेखन
ऋषिनगर विस्तार,
उज्जैन (म.प्र.)

भगवान श्रीराम तथा श्रीकृष्ण इन दोनों ही विष्णुजी के अवतारों का विराट् स्वरूप भक्तों के लिए विषद् जिज्ञासा का विषय रहा है। त्रेता युग में श्रीराम ने अपने प्राकट्य के साथ ही माता कौसल्या को अपना अद्भुत रूप दिखलाया। द्वापर युग में श्रीकृष्ण ने अपना विराट् स्वरूप अपने प्रिय भक्त अर्जुन को दिखलाया है। श्रीकृष्ण के विराट् स्वरूप का वर्णन हमें विश्व–प्रसिद्ध ग्रंथ श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय में प्राप्त होता है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिव्य चक्षु प्रदान किए थे जिससे अर्जुन भगवान के विराट् स्वरूप का दर्शन कर अभिभूत हो गए थे। श्रीकृष्ण कहते हैं–

नतु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा। दिव्यं ददामि ते चक्षुरू पश्य मे योगमैश्वरम्।।

हम यहाँ गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस से श्रीराम के विभिन्न प्रसंगों में उनके विराट् स्वरूप का वर्णन करने का एक लघु प्रयास कर रहे हैं। इससे श्रीरामचरितमानस का श्रद्धा भक्तिपूर्वक वाचन करने वाले भक्तों को विशेष लाभ प्राप्त होगा और हमारी होनहार नई पीढ़ी भी इससे लाभ अर्जित कर सकेगी।

जगदाधार श्रीराम चौत्र माह में प्रकट हुए–

नौमी तिथि मधुमास पुनीता सकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता।
मध्य दिवस अतिसीत न धामा पावन काल लोक विश्रामा।।

(श्री रा.च.मा. बालकाण्ड दोहा १९०/१)

भाव यह है कि चौत्र माह के शुक्ल पक्ष की नौमी तिथि को मध्याह्न में न अधिक शीतलता न अधिक धूप ऐसे समय श्रीराम राजा दशरथजी के यहाँ अवतरित हुए। आकाश से पुष्प वर्षा होने लगी, दुन्दुभी बजने लगी। देवतागण पुष्प वर्षा करने लगे और उपहार भेंट करने लगे।

माता कौसल्या ने उनका दिव्य स्वरूप देखा। साँवला रंग, चारों भुजाओं में उन्होंने आयुध धारण कर रखे थे, आभूषण और वनमाला पहन रखे हैं। विशाल नेत्र थे, शोभा के सागर थे

और खर राक्षस को मारने वाले भगवान प्रकट हुए। तुलसीदासजी कहते हैं–

भए प्रकट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी।
हरर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रुप विचारी।
लोचन अभिरामा तनु धन स्यामा निज आयुध भुजचारी।।
भूषन वनमाला नयन बिसाला। सोभा सिन्धु खरारी।।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा १९१/छंद १)

इस दिव्य रूप को देखकर माता दोनों हाथ जोड़कर कहती हैं–

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता।।
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जब अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता।।

(श्रीरामचतिरमानस बालकाण्ड दोहा १९१/छंद २)

देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड।
रोग रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मण्ड।।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा २०१)

भाव यह है कि माता देखती है कि भगवान के प्रत्येक रोम में माया के अनेक ब्रह्माण्डों के समूह हैं। उन्हें आश्चर्य होता है कि इस रूप में बालक राम उनके गर्भ में रहे। वे विचलित हो जाती हैं। जब उन्हें ज्ञान प्राप्त होता है तो भगवान मुस्कराते हैं। माता को समझाते हैं। माता उनसे विनती करती है कि वे अपने इस विराट् स्वरूप को त्याग दे और अपना प्रिय बाल रूप के दर्शन कराएँ।

माता फिर कहती हैं–

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रुपा।
कीजै सिसु लीला अति प्रिय सीला यह सुख परम अनूपा।।
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुर भूपा।
यह चरित जो गावहि हरि पद पावहिं तेन परहिं भव कूपा।।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड १९१/४)

भाव यह है कि हे तात! इस रूप को त्याग दो। शिशु के अनुरूप चेष्टा करो वही रूप मुझे अति प्रिय है और सुखदायक भी है। ऐसे वचन सुनकर बालक रूदन करने लगा। भगवान के इस चरित्र को जो पढ़ता है वह ईश्वर का सामीप्य प्राप्त करता है और संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

अगत्स्य ऋषि के आश्रम में रामकथा चल रही थी। शिवाजी भी सती के साथ रूक कर कथा श्रवण कर रहे थे। वे वहाँ से सती के साथ कैलास पर्वत के लिए रवाना हुए। मार्ग में उन्हें सीता हरण के पश्चात श्रीराम, लक्ष्मण सीताजी को खोजते हुए वन में जाते हुए दिखलाई दिए जो साधु वेश में दण्डक वन में विचरण कर रहे थे। शिवजी मन ही मन श्रीराम के दर्शन करना चाह रहे थे। सती इस बात से अनभिज्ञ थी। शिवजी ने श्रीराम को देखा। श्रीराम ने भी शिवजी को देख लिया, परन्तु अनुकूल अवसर नहीं होने से परिचय नहीं दिया। शिवजी अति प्रसन्न हो रहे थे। सती को शंकरजी की ऐसी दशा देखकर कुछ सन्देह हुआ। उन्हें ऐसा आभास हुआ कि जिस शिवजी की सारा विश्व आराधना करता है उन्होंने राजपुत्र को सच्चिदानन्द परमधाम कहकर नमस्कार क्यों किया और इतने प्रेममग्न क्यों हो गए? श्रीराम तो विष्णु के अवतार हैं, वे भला पत्नी को वन में एक सामान्य जन की तरह क्यों खोजेंगे। सती ने शिवजी को कुछ भी नहीं कहा परन्तु शिवजी सती की मन की स्थिति को समझ गए। उन्होंने सती को समझाया कि वे मेरे इष्ट देव श्रीराम ही हैं। समझाने पर भी सती का सन्देह दूर नहीं हुआ तो शिवजी ने कहा कि तुम्हें विश्वास न हो तो तुम जाकर स्वयं श्रीराम की परीक्षा ले लो। शिवजी मन में समझ गए कि अब सती के जीवन में कल्याण नहीं है।

सती ने सीता का वेश धारण किया और श्रीराम की परीक्षा लेने का विचार किया। जिस मार्ग पर श्रीराम व लक्ष्मण चल रहे थे उसी मार्ग पर आगे आगे सीताजी के रूप में सती चल रही थी। स्त्री स्वभाव के अनुसार वह श्रीराम के सामने दुराव करना चाहती थी। परन्तु श्रीराम ने मुस्करा कर पूछा–

जोरी पानि प्रभु कीन्ह प्रनामु। पिता समेत लीन्ह निज नामू।
कहेउ बहोरी कहाँ वृषकेतू। विपिन अकेलि फिरहूँ केहि हेतू।।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा ५२/४)

भाव यह है कि श्रीराम ने प्रणाम किया। पिता सहित अपना नाम बताकर परिचय दिया और शिवजी कहाँ है ऐसा पूछा, यह भी कहा कि जंगल में अकेली क्यों घूम रही हैं।

श्रीराम के इन शब्दों को श्रवण कर सती डर कर चुपचाप शंकरजी के पास आ गई। मार्ग में उन्हें सीताजी सहित श्रीराम लक्ष्मण दिखाई दिए। इससे वह श्रीराम का सच्चिदानन्द रूप देख सके और सती की बैचेनी दूर हो जाए और वह प्रकृतिस्थ हो जाए। वह आगे बढ़ रही थी। मार्ग में जब–जब सती ने पीछे मुड़ कर देखा उन्हें हर बार श्रीराम लक्ष्मण और सीताजी दिखाई दे रहे थे। यह प्रभु की लीला थी। सती ने यह भी देखा कि ब्रह्म, विष्णु और शिव श्रीराम की वन्दना कर रहे हैं। सती को ब्रह्माजी और लक्ष्मीजी भी दिखाई दीं। सती ने भगवान के सभी चराचर जीव भी देखे। सती श्रीराम के इस स्वरूप को देखकर घबरा गई। वे मन ही मन श्रीराम की वन्दना कर शिवजी के पास पहुँची।

बुहुरि बिलोकेउ नयन उधारी। कछु न दीख तहं दच्छकुमारी।
पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा। चली तहाँ जहँ रहे गिरीसा।

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा ५४/४)

शिवजी ने सती का सम्पूर्ण चरित्र ध्यान लगा कर देख लिया। सती ने उनसे दुराव किया है। वे सम्पूर्ण घटनाक्रम जान गए। सती ने सीता का वेष धारण किया था, यह जान कर शिवजी को बड़ा विषाद हुआ। सती मन में यह समझ गई मैंने शिवजी से जो कपट किया वह वे जान गए हैं–

जलु पय सरिस बिकई देखहु प्रीति कि रीति भलि।
बिलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि।। ५७(ख)

(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड दोहा ५७ (ख))

भावार्थ यह है कि प्रीति की रीति देखिये कि जल भी दूध के साथ मिलकर दूध के भाव बिकता है परन्तु कपट रूपी खटाई पड़ते ही दूध फट जाता है। उसका स्वाद जाता रहता है।

शिवजी ने सती का त्याग कर दिया और अखंड समाधि लगा दी। सती ने श्रीराम का मन ही मन स्मरण किया और उनसे मृत्यु का वरदान माँगने लगी कि मेरा यह देह छूट जाए।

काकभुशुण्डीजी को भी श्रीराम ने अपना विराट् रूप दिखलाया। काकभुशुण्डीजी कहते हैं जब अवधपुरी में रामजन्म हुआ तो मैं वहाँ गया और वहाँ पांच वर्ष तक रहा। श्रीराम मेरे इष्टदेव हैं। मैं उनकी बाललीलाओं को देखकर आनंदित होता हूँ। काकभुशुण्डी और शंकरजी मानव रूप में रामजन्म के उत्सव में अयोध्या में सम्मिलित हुए थे। किसी भी व्यक्ति को इस रहस्य की जानकारी नहीं थी। हम दोनों ने अयोध्या में राम जन्मोत्सव देखा कि किस प्रकार राजा दशरथ आनन्द मग्न होकर अयोध्यावासियों को दान दे रहे थे। हाथी, घोड़े, सोना, हीरे, मोती, गाय तथा कीमती वस्त्रादि दिए जा रहे थे और सभी लोग नवजात शिशुओं (श्रीराम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न) को दीर्घायु होने का आशीर्वाद दे रहे थे। शंकरजी गिरीजा से कह रहे थे–

औरउ एक कहऊ निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ़मति तोरी।।
काक भुसुंडि संग हम दोऊ। मनुज रूप जानह नहीं कोऊ।।

(श्रीरामचरितमानस दोहा १९५/२ बालकाण्ड)

काकभुशुण्डी कहते हैं कि वे बाल्यावस्था में जहाँ–जहाँ आँगन में श्रीराम घूमते थे वहाँ–वहाँ मैं भी उनके समीप उड़ कर जाता था। आँगन में पड़े हुए उनके भोजन के झूठन को मैं खाता था–

जूठनि परइ अजिर महँ सो उठाइ करि खाऊँ।। *५७ (क)*

(श्रीरामचरितमानस उत्तरकाण्ड ७५/क)

भगवान राम बाल्यावस्था में महल के आँगन में कौआ रूपधारी काकभुशुण्डीजी के साथ खेलते, किलकारी करते हुए मुझे पकड़ने दौड़ते, मैं भाग जाता तो मुझे पुआ दिखाते। कौआ उनके चरण स्पर्श करने जाता तो वे पीछे मुड़ मुड़ कर देखते हुए भाग जाते। एक दिन की बात है कि बाल रूप श्री हरि घुटने–घुटने चलते हुए कौआ को पकड़ने के लिए दौड़े उनका हाथ आगे की ओर बढ़ा हुआ था। कौआ आकाश में दूर जा रहा था। काकभुशुण्डी कहते हैं कि मैं पीछे देखता तो मुझे वहाँ वह हाथ बार–बार दिखलाई देता। मैं ब्रह्म लोक गया तो मैंने पीछे मुड़ कर देखा तो वहाँ भी श्री रघुनाथजी का हाथ दिखा। हमारा दो अंगुल का ही फासला था। मैं यह देखकर भयभीत हो गया–

ब्रह्मलोक लगि गयऊँ मैं। चितयऊँ पाछ उड़ात।
जुग अंगुल कर बीच सब। राम भजहि मोहि तात।।

(श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड दो ७९/क)

भयभीत होने पर पक्षीराज ने आँखें बंद कर ली। जैसे ही उन्होंने आँखें खोली अपने आपको उन्होंने अयोध्या में देखा। पक्षीराज बालक राम के मुँह में प्रवेश कर गए। उन्होंने बालक राम के उदर में अनेक ब्रह्माण्ड के समूह देखे। वहाँ अनेक लोक थे और सब की रचना भी विचित्र थी। वहाँ अगणित तारागण थे। सूर्य, चन्द्रमा, लोकपाल, पर्वत, भूमि आदि अनेक आश्चर्यजनक वस्तुएँ थीं, वन थे, समुद्र, नदी, तालाब थे, देवता, नाग, सिद्ध, किन्नर आदि जड़चेतन सभी थे। तुलसीदासजी कहते हैं–

उदर माझ सुनु अंडज राया देखेऊँ बहु ब्रह्माण्ड निकाया।।
अति विचित्र तहँ लोक अनेका। रचना अधिक एकते एका।।२।।
कोटिन्हे चतुरानन गौरीसा। अगनित भूधर भूमि बिसाला।।
अगनित लोकपाल जम काला। अगनित भूधर भूमि बिसाला।।३।।
सागर सरि सर विपिन अपारा। नाना भाँति सृष्टि बिस्तारा।।
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर। चारि प्रकार जीव सचराचर।।४।।

(श्रीरामचरितमानस उत्तरकाण्ड दोहा ७९–ख)

जो नहि देखा नहि सुना जो मनहूं न समाइ।
सो सब अद्‌भुत देखेऊँ बरनि कवनि बिधि जाइ।।८०।। क

(श्रीरामचरितमानस उत्तरकाण्ड दोहा ८० (क))

इस प्रकार काकभुशुण्डीजी एक–एक ब्रह्माण्ड में सौ–सौ वर्ष तक रहे। सभी के विभिन्न रूप देखे पर श्रीराम का स्वरूप मुझे सभी जगह एक–सा ही दिखाई दिया। मेरी व्याकुलता देख कर श्रीरामचन्द्रजी हँस दिये जिससे मैं उनके उदर से बाहर आ गया। इस प्रकार श्रीराम का विराट् स्वरूप काकभुशुण्डीजी ने देखा। श्रीराम ने उन्हें वर माँगने का कहा तो उन्होंने भगवान के चरणों में भक्ति देने का वरदान माँगा–

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिन्धु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम।।८४।।(ख)

(श्रीरामचरितमानस उत्तरकाण्ड ८४(ख))

चिंता और चिता में केवल एक बिंदु का ही अंतर है लेकिन चिता निर्जीव को जलाती है। और चिंता जीवित को जलाती है।

गुणों पर चर्चा से लाभ

डॉ. निशा नंदिनी भारतीय
तिनसुकिया, असम

मनुष्य का मस्तिष्क दो तरह से कार्य करता है। एक सकारात्मक रूप में दूसरा नकारात्मक रूप में। इन दोनों में नकारात्मक मस्तिष्क अधिक सक्रिय रहता हैं। एक साधारण व्यक्ति अपने पूरे दिन में अपने नकारात्मक मस्तिष्क को अधिक सक्रिय रखता है इसलिए पूरे दिन की बातचीत में 75% बातें लोगों की बुराई तथा अवगुणों को लेकर होती है। इस तरह मनुष्य का मस्तिष्क और अधिक नकारात्मक होता जाता है। उसके मन मस्तिष्क में सदैव बुराइयां चलती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति अपने आपको भूल कर सदैव दूसरों का मूल्यांकन करने में लगा रहता है। ऐसे लोग किसी के रूप–रंग, व्यवहार या पृष्ठभूमि के आधार पर उसके बारे में धारणा बना लेते हैं। इससे उन्हें बात करने का एक मुद्दा मिल जाता है। अगर हम सिर्फ हर किसी की अच्छाइयों और गुणों को ढूंढे और उन्हीं की चर्चा करें तो हम कई प्रकार से लाभान्वित हो सकते हैं। सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि हमारा सकारात्मक मस्तिष्क सक्रिय होगा। हमारा मन–मस्तिष्क सदैव सकारात्मक ऊर्जा से भरा रहेगा। सकारात्मक सोच हमें अपने जीवन के बारे में बेहतर निर्णय लेने और दीर्घकालिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद कर सकती है। इससे हम यह महसूस करेंगे कि हमारा शरीर और दिमाग काम के साथ–साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों के प्रति भी ज्यादा सजग हो गया है।

सकारात्मक सोच के माध्यम से व्यक्ति का विकास होता है और नकारात्मक सोच के कारण वह विनाश को प्राप्त होता है। ज्ञानेंद्रियों के द्वारा व्यक्ति को वातावरण से तरह–तरह के विचार मिलते हैं और इन विचारों पर सोचकर वह निश्चय करता है कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं।

दूसरा लाभ यह है कि जब हम दूसरों के गुणों या अच्छाइयों पर चर्चा करेंगे तो हम बात कम करेंगे। हमारा मन शांत होगा क्योंकि लोग निंदा रस में ज्यादा आनंद लेते हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि मौन रहने से व्यक्ति अधिक समझदार और उत्पादक बनने की ओर अग्रसर होता है। इससे उसके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों में सुधार हो सकता है।

कम बोलने से हमें आत्मकेंद्रित व्यक्तित्व की प्राप्ति होती है। कम बोलना या मौन एक शक्ति नियंत्रण की साधना है। कम बोलकर हम दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को महत्व देते हैं और उनसे सीखने के इच्छुक होते हैं।

और तीसरा लाभ यह है कि हम किसी की अच्छाइयों पर चर्चा करके निंदा रस से बचेंगे। निंदा और किसी का अपमान करने से हम पाप के भागीदार बनते हैं। इसको करने वाला इंसान अक्सर अपने मूल काम को भूल जाता है और बाकी लोगों से पीछे रह जाता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि दूसरों की निंदा करने से दूसरों का नहीं बल्कि खुद का ही नुकसान होता है। निंदा से ही मनुष्य की बर्बादी की शुरुआत होती है।

किसी व्यक्ति द्वारा स्वयं के अहं को तुष्ट करने के क्रम में दूसरे के चरित्र का नकारात्मक चित्रण ही निंदा कहलाता है। ऐसे लोगों को निंदक कहा जाता है। संत कबीर का निंदक दूसरा था जो आज का निंदक नहीं है आज के निंदक का उद्देश्य सुधार करना नहीं वरन अपयश करना होता है। उसका काम किसी की बुराई करके अपने मन की ईर्ष्या, कुंठा और प्रतिशोध की भावना को शांत करना है।

निंदा करने की वजह से व्यक्ति स्वयं की बुराई नही देख पाता है। जब निंदा करना एक आदत बन जाती है,तब इंसान हर वक्त दूसरों में कमियाँ और बुराई ढूंढ़ने लगता है। उसका सकारात्मक नजरिया धीरे–धीरे नकारात्मक हो जाता है। निंदा करने से किसी को कुछ नहीं मिलता केवल स्वयं की हानि होती है इसलिए गुणों पर चर्चा करने से हम निंदा रस से बच सकते हैं।

चौथा और सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि जब हम किसी के गुणों पर चर्चा करेंगे। तब हम उन गुणों को अपने अंदर भी देखना चाहेंगे। इस तरह हमारे अंदर सुधारात्मक प्रवृत्ति जागृत होगी। हम दूसरों के व्यक्तित्व से प्रेरणा ले सकेंगे।

हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम सदैव दूसरों की अच्छाई या गुणों को ही देखेंगे बुराई को नहीं और सदैव अच्छाइयों की चर्चा करेंगे। जीवन में जिससे भी मिलेंगे उसके अंदर अच्छाइयों को ढूंढेंगे।

अपने परिवार के लोगों की अच्छाइयों को ढूंढकर उसपर चर्चा करेंगे। इस तरह हम अपने अंदर सुधार करके अपने परिवार व रिश्तों को टूटने से भी बचा सकते हैं। गुणों पर चर्चा करके हमारा चेहरा सदैव खिला– खिला रहेगा। हम सदैव हंसते मुस्कुराते रहेंगे

अंत में...

करो गुणों की चर्चा आत्म सुधार होगा।
आत्म सुधार करके जीवन सफल होगा।

मुक्तिधाम : जीवन का सत्य

प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

जीवन का तो अंत सुनिश्चित, मुक्तिधाम यह कहता है।
जीवन तो बस चार दिनों का, नाम ही बाकी रहता है।।

रीति,नीति से जीने में ही, देखो नित्य भलाई है।
दूर कर सको तो तुम कर दो, जो भी साथ बुराई है।।
नेहभाव ही सद्गुण बनकर, पावनता को गहता है।
जीवन तो बस चार दिनों का, नाम ही बाकी रहता है।।

मुक्तिधाम में सत्य समाया, बात को समझो आज।
साँसें तो बस गिनी–चुनी हैं, मौत का तय है राज।।
बड़ा सफर है मुक्तिधाम का, मोक्ष को तो जो दुहता है।
जीवन तो बस चार दिनों का, नाम ही बाकी रहता है।।

रहे मुक्ति की चाहत सबको, सच्चाई को जानो।
मोक्ष मिले यह जीवन जीकर, बात समझ लो,मानो।।
कितना भी हो बड़ा राज्य पर, कालचक्र में ढहता है।
जीवन तो बस चार दिनों का, नाम ही बाकी रहता है।।

मुक्तिधाम तो बड़ा तीर्थ है, सबको जाना होगा।
मौत का नगमा अनचाहे ही, सबको गाना होगा।।
समझ न पायें भले आज हम, काल नित्य पर बहता है।
जीवन तो बस चार दिनों का, नाम ही बाकी रहता है।।

"आपका सबसे बड़ा मित्र आपका नियंत्रित एक मन है.!"

'भये प्रकट कृपाला दीन दयाला'

डॉ. सन्तोष खन्ना
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
वरिष्ठ सम्पादक (अध्यात्म संदेश)
वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रधान संपादक : महिला विधि भारती त्रैमासिक पत्रिका
दिल्ली–110088

इतिहास रचा भी जाता है और इतिहास स्वयं को दोहराता भी है । 22 जनवरी, 2024 का एक ऐसा ऐतिहासिक दिन था जब भारत में अयोध्या में एक अनोखा और नया इतिहास रचा गया, जब पंचशती के बाद स्वर्ग से भी अधिक सुंदर सजी धजी अयोध्या में राम जन्मभूमि पर निर्मित विलक्षण मंदिर में प्रभु राम लला की प्राण प्रतिष्ठा की गई। भारत राष्ट्र के जीवन में यह एतिहासिक दिन कई शताब्दियों के बाद आया है। अगर हम यह कहें कि इतिहास स्वयं को दोहराता भी है तो कह सकते हैं कि जब त्रैता युग में महाराज दशरथ की रानी कौशल्या की कोख से राम ने जन्म लिया था तब भी एक नया इतिहास रचा गया था जब स्वयं विष्णु भगवान ने तत्कालीन समय के जन जन की आततायियों से रक्षा के लिए कौशल्या की कोख से राम रुप में जन्म लिया था। इस बार अयोध्या में अनुपम, अद्वितीय और अद्भुत निर्मित मंदिर में राम लला की भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के हाथों प्राण प्रतिष्ठा की गई। कौन से मंदिर में विग्रह की कौन प्राण प्रतिष्ठा करेगा विशेष रूप से अयोध्या में बने इस दुर्लभ मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का दायित्व किसे मिलेगा, इसका फैसला कोई व्यक्ति नहीं कर सकता है । यह तो दैवीय निर्णय होता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अलावा दैवीय शक्ति किसका चयन करती जब कि राम को सम्पूर्ण रूप से समर्पित सिपाही के रूप में नरेंद्र मोदी राम जन्मभूमि के आंदोलन के आरंभ से लेकर अंत तक इस के प्रति संपूर्णता समर्पित रहे हैं कभी अप्रत्यक्ष रूप से और कभी प्रत्यक्ष रूप से।

जब माननीय आडवाणी जी के नेतृत्व में 25 दिसंबर, 1990 को राम रथ यात्रा सोमनाथ से आरंभ होकर 30 अक्टूबर 1991 को अयोध्या तक निकाली गई थी तो उस यात्रा के सारथी

भी श्री नरेंद्र मोदी ही थे। जब अयोध्या से लौटते हुए कार सेवकों को गोधरा में रेलगाड़ी में जिंदा जला दिया गया था तो उस बर्बर और विभत्स कांड के बाद जिस तरह से परिस्थितियों ने मोड़ लिया उसने नरेन्द्र मोदी जी को जितनी मुसीबतें झेलनी पड़ी वह अकल्पनीय थी। कोई और व्यक्तित्व होता तो वह ऐसी विपरीत परिस्थितियों में टूट जाता परंतु जिस धैर्य, सूझबूझ और आस्था से वह राम के काम में लगे रहे, गुजरात को शासन प्रशासन में उसे आगे बढ़ाते रहे, वह सर्वविदित है और अंततः देश की सर्वोच्च अदालत ने उन्हें हर तरह से क्लीन चिट दे दी, यह अपने आप में इतिहास है चमत्कार हैं। अब तो कांग्रेस के दिग्गज नेता आचार्य प्रमोद कृष्णन ने भी राम मंदिर पर उच्चतम न्यायालय के फैसला का उल्लेख करते हुए कहा है कि अगर मोदी ना होते तो राम मंदिर नहीं बनता। अयोध्या में राम मंदिर और उसमें राम लला की धूमधाम से प्राण प्रतिष्ठा का श्रेय मोदी और योगी दोनों को जाता है। विदेशियों सहित भारत के हजारों गण मान्य अतिथियों की उपस्थिति में प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम भव्य और दिव्य रूप से संपन्न हुआ। इसमें सेंकड़ों की संख्या में साधु समाज भी उपस्थित था ।इसके लिए समूचे भारत के जन–जन की आस्था, विश्वास और उत्साह की भावना जिस तरह से हिलोरें ले रही थीं वह अवलोकनीय था। प्राण प्रतिष्ठा के बाद रात को समूचे भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में इस प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में दीवाली मनाई गई।

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात प्रधानमंत्री ने अपने जो उद्‌गार व्यक्त किए वह भी अभूतपूर्व और एतिहासिक थे। उन्होंने कहा, 'हमारे राम आ गए हैं। हमारे राम आए हैं आज हमें श्री राम मंदिर मिला है गुलामी की मानसिकता को तोड़कर राष्ट्र इतिहास का सृजन कर रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि भगवान राम भारतवासियों के अंतर्मन में विराजे हैं हर युग में लोगों ने राम को जिया है। राम क्या है इसके बारे में प्रधानमंत्री ने उन्हें तरह तरह से परिभाषित किया कि 'राम भारत की आस्था है, राम भारत का आधार हैं राम भारत का विधान है राम भारत की चेतना है राम सबके हैं और राम सब में हैं। राम आग नहीं, राम ऊर्जा है,राम विवाद नहीं, राम समाधान है।'

उन्होंने समूचे भारत का आह्वान करते हुए कहा कि : हमें अब रुकना नहीं है। परंपरा और आधुनिकता को साथ लेते हुए आगे बढ़ना है। यह भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा भव्य भारत के उत्कर्ष का। कालचक्र बदल रहा है हमारी पीढ़ी को कॉल ने भी निर्माण के रूप में चुना है, इसलिए यही समय है सही समय है। हमें आज इस पवित्र समय में आगे 1000 साल की नींव रखनी है समर्थ, सक्षम और दिव्य निर्माण की सौगंध है।'

जिस तरह से आज हम राम की प्राण–प्रतिष्ठा के अवसर पर भव्य और दिव्य समय के साक्षी हैं त्रेता युग में भी भगवान विष्णु ने जनता को आताताईयों के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए सूर्यवंश के महाराज सम्राट दशरथ के यहां महारानी कौशल्या की कोख से राम के रूप में जन्म लिया था। राम चरित मानस में राम अवतार के समय महतारी कौशल्या की चेतना इस बात से परिचित थी कि उसकी कोख से कोई साधारण मनुष्य नहीं जन्मा है बल्कि स्वयं विष्णु ने मनुष्य देह धारण कर राम के रूप में अवतार लिया है। वह राम के अलौकिक रूप को देखकर राम की स्तुति करती हैं। यह स्तुति गोस्वामी तुलसीदास ने अपने महान ग्रंथ रामचरितमानस के बालकांड में रची है तुलसीदास जी कहते हैं :–

'भए प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप विचारी।'

(अर्थात् राम दीनों पर दया करने वाले माता कौशल्या के हित के ही के रूप में प्रकट हुए हैं मुनियों के मन को हरने वाले भगवान के अद्‌भुत रूप का विचार कर कौशल्या हर्ष से भर गई। प्रभु राम का रूप नेत्रों को आनंद देने वाला, शरीर मेघ के समान श्याम रंग का है और उन्होंने अपनी चारों भुजाओं में शस्त्र धारण किए हुए हैं कौशल्या उनका अलौकिक स्वरूप देखकर कहती है कि मैं तुम्हारी स्तुति किस तरह करूं, वेद पुराण और स्मृतियों में तुम माया, गुण और ज्ञान से परे हो, अनंत का सागर हो। कौशल्या माता प्रभु से अनुनय करती है कि मुझे वात्सल्य सुख देने के लिए आप यह अलौकिक रूप छोड़कर अत्यंत प्रिय बाल रूप धारण कर बाल लीला करें। तब भगवान राम बाल रूप धारण कर रोने लगते हैं और मां उन्हें झट से वक्ष से लगा लेती हैं। राम की लीलाओं का वर्णन करते हुए तुलसीदास कह उठते हैं :

'बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार।।

भावार्थ:–ब्राह्मण ब्राह्मण, गो, देवताओं और संतों के हित में प्रभु ने इस धरती पर अवतार लिया है। वह माया और उसके गुणों और इंद्रियों से परे है। उनका शरीर उनकी इच्छा से बना है। तुलसी दास जी ने तो कहा भी है 'हरि अनन्त हरि कथा अनंता।' वैसे भी ईश्वर के संबंध में निराकार और साकार की अवधारणा

भी सर्वविदित है। ध्यातव्य है कि तुलसी दास जी ने ईश्वर अर्थात् राम को निर्गुण माना है पर उनकी उपासना के लिये साकार रूप स्वीकार किया है। तभी तो वह यह भी कहते हैं :–

'सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरी जुग पानी।।'

रामचरितमानस 1/8/1

हिंदी हिन्दुस्थान समाचार में प्रकाशित एक आलेख के अनुसार यह बताया गया है कि बाबरी मस्जिद में वहां कैसे राम लला प्रकट हुए थे। इस आलेख में लिखा गया है कि 'यह सन् 1949 की एक ठंडी रात थी, तारीख थी 22 –23 दिसंबर। उस रात अयोध्या में जो हुआ वह किसी चमत्कार से कम नहीं था। बाद में वहां सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात हवलदार अब्दुल बरकत ने तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट को अपने आधिकारिक बयान में बताया कि 22 और 23 दिसंबर, 1949 के बीच की रात उसने करीब 2:00 बजे इमारत के अंदर एक खुदाई रोशनी कौंधते देखी जिसका रंग सुनहरा था और उस में उसने एक चार पांच वर्ष के देवतुल्य बालक को देखा। उस दृश्य को देखकर वह सकते में आ गया। जब उसकी चेतना लौटी तब उसने देखा कि बाबरी मस्जिद के मुख्य द्वार का ताला टूटा पड़ा था और असंख्य हिंदुओं की भीड़ भवन में प्रवेश कर सिंहासन पर प्रतिष्ठापित मूर्ति की आरती उतारते हुए 'भये प्रकट कृपाला दीन दयाला' की स्तुति कर रही है। जाहिर है कि मंदिर खुल चुका था और प्रतिदिन पूरा पूजन शुरू हो गया था अब उसे दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकते थी। राम जन्मभूमि के उद्धार के लिए किसी न किसी रूप में 16वीं शताब्दी से जारी अनिवार्य आंदोलन का आजाद हिंदुस्तान में यह पहला अहम् पड़ाव था।

इस चमत्कार के बाद तब भी चमत्कार हुआ था जब एक फरवरी, 1986 को फैजाबाद उर्फ अयोध्या में राम लला विराजमान के स्थान का ताला खोलने के आवेदन की जिला जज की अदालत में सुनवाई हो रही थी। उस दिन ताला खोलने का शाम चार बजे फैसला सुनाया गया तो रामभक्तों में इस आदेश का इतना उत्साह था कि चाबियां उपलब्ध होने से पहले ही उन्होंने ताला तोड़ दिया और अंदर जा कर राम लला की जय जयकार करने लगे। इस संबंध में इस जिला जज ने बाद में अपने संस्मरणों में लिखा है कि एक फरवरी, 1986 को ताला खोलने के मामले की सुनवाई चल रही थी, उसमें पता नहीं कहां से एक बंदर आया और वहां एक खंभे पर बैठ गया और सारा दिन वहीं बैठा रहा, कई लोग उसे खाने के लिए कुछ कुछ दे रहे थे पर उसने कुछ भी नहीं खाया। फैसला सुनाये जाने के बाद वह वहां से चला गया और जब जिला जज ताला खोलने के फैसला सुनाये जाने के बाद अपने घर पहुंचे तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहीं बंदर उनके बरामदे में बैठा मिला मानों वहां वह जज के प्रति अपना आभार व्यक्त करने गया हो। क्या वह हनुमान थे या हनुमान की तरफ से आया कोई बंदर था?

इसे भी चमत्कार नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे।

अभी अयोध्या में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह की तैयारी चल रही थी, लोग कई तरह के चमत्कार होने के समाचार दे रहे थे कि अयोध्या में अचानक गिद्धों के झुंड के झुंड वहां आने लगे। इसी प्रकार, वहां वानरों की संख्या में भी अप्रत्याक्षित वृद्धि होती देखी गई। वैसे सभी जानते और मानते हैं कि चमत्कार होते हैं जिनकी तर्क की दृष्टि से कोई व्याख्या नहीं की जा सकती है। हम ने और देश दुनिया ने अयोध्या में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा होने का चमत्कार देखा है। पांच सदियों से रामजन्म भूमि के लिए आंदोलन चल रहा था और कोई कुछ नहीं करना चाहता था अथवा कुछ नहीं कर पा रहा था बल्कि मंदिर निर्माण के लिए बाधा डालने वाले अधिक हावी हुआ करते थे। फिर यह कैसा और कैसे चमत्कार हुआ कि अयोध्या में राम लला का इतना भव्य, दिव्य और शानदार मंदिर का निर्माण हुआ कि दुनिया उसकी शिल्प और कला के अजूबे पन के लिए दांतों तले अंगुली दबा रही है और प्राण प्रतिष्ठा का समारोह भी इतना दिव्य और भव्य हुआ कि जिसकी कहीं कोई मिसाल नहीं मिलती। हमारे आंखों के सामने इतना शानदार और जानदार चमत्कार हुआ,जिसे देखने के लिए हमें इसे देखने का सौभाग्य मिला,ऐसे चमत्कार केवल रामजी की कृपा से ही संभव हो सकते हैं। मुझे विश्वास है कि राम लला की प्राण प्रतिष्ठा का जो यह अनुपम इतिहास बना है वह ऐसे ही नहीं बना है। वह भारत के लिए एक नये युग का सूत्रपात करेगा।

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने चमत्कारिक शब्दों में इस भावना को अभिव्यक्ति दी है जब वह कहते हैं कि 'हमारा भविष्य हमारे अतीत से सुंदर होने जा रहा है। हमारा समाज एक उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर हो रहा है क्योंकि राम सबके हैं, राम वर्तमान ही नहीं, वह अनन्त काल है। राम लला की प्राण प्रतिष्ठा हमारे प्राचीन आदर्श 'वसुधैव कुटुम्बकम' की प्राण प्रतिष्ठा है, भारतीय संस्कृति की प्राण प्रतिष्ठा है, भारतीय मानव मूल्यों और आदर्शो की प्राण प्रतिष्ठा है।' आइये, हम सब मिलकर कर राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रधानमंत्री के मुखारविंद से गुंजायमान भावों और भविष्यवाणी को चरितार्थ कर के दिखाएं। जय श्री राम। ■

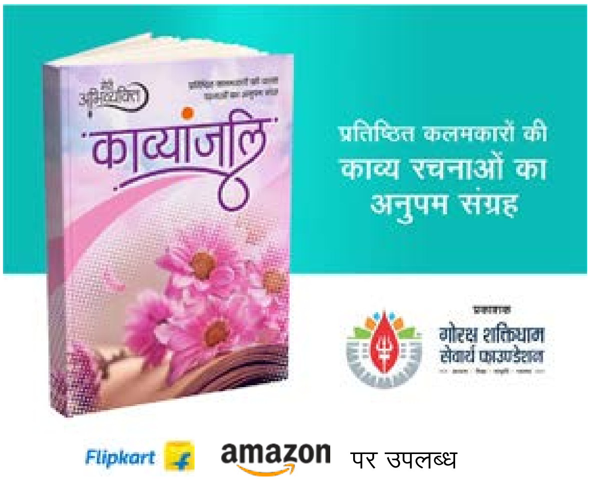

भारतीय संस्कृति में वसंत पंचमी

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास नदेसर,
कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी

वसंत पंचमी एक ओर जहां ऋतुराज के आगमन का दिन है, वहीं यह विद्या की देवी और वीणावादिनी सरस्वती की पूजा का भी दिन है। ग्रंथों के अनुसार वाग्देवी सरस्वती ब्रह्मस्वरूपा, कामधेनु तथा समस्त देवों की प्रतिनिधि हैं। ये ही विद्या, बुद्धि और ज्ञान की देवी हैं। इसीलिए इस दिन विद्या तथा संगीत की देवी की पूजा की जाती है। अमित तेजस्वनी व अनंत गुणशालिनी देवी सरस्वती की पूजा–आराधना के लिए माघमास की पंचमी तिथि निर्धारित की गयी हैं। वसंत पंचमी को इनका आविर्भाव दिवस माना जाता है। अतः वागीश्वरी जयंती व श्रीपंचमी नाम से भी यह तिथि प्रसिद्ध है।

वसंत पंचमी को त्योहार के रूप में मनाए जाने के पीछे कई तरह की मान्यताएं हैं। ऐसा माना जाता है कि वसंत पंचमी के दिन ही देवी सरस्वती का अवतरण हुआ था। मान्यता है कि ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना करने के बाद मनुष्य की रचना की। मनुष्य की रचना के बाद उन्होंने अनुभव किया कि मनुष्य की रचना मात्र से ही सृष्टि की गति को संचालित नहीं किया जा सकता। उन्होंने अनुभव किया कि निःशब्द सृष्टि का औचित्य नहीं है, क्योंकि शब्दहीनता के कारण विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं था और अभिव्यक्ति के माध्यम के नहीं होने के कारण ज्ञान का प्रसार नहीं हो पा रहा था। इसके बाद उन्होंने विष्णु से अनुमति लेकर एक चतुर्भुजी स्त्री की रचना की, जिसके एक हाथ में वीणा तथा दूसरा हाथ वर मुद्रा में था। अन्य दोनों हाथों में पुस्तक और माला थी। ब्रह्म जी ने देवी से वीणा बजाने का अनुरोध किया। जैसे ही देवी ने वीणा का मधुरनाद किया, संसार के समस्त जीव–जन्तुओं को वाणी प्राप्त हो गई। जलधारा में कोलाहल व्याप्त हो गया। पवन चलने से सरसराहट होने लगी। तब ब्रह्म ने उस देवी को वाणी की देवी सरस्वती कहा। सरस्वती को बागीश्वरी, भगवती, शारदा, वीणावाद और वाग्देवी सहित अनेक नामों से पूजा जाता है। ये विद्या और बुद्धि प्रदाता हैं। संगीत की

उत्पत्ति करने के कारण ये संगीत की देवी भी हैं। वसंत पंचमी के दिन को इनके जन्मोत्सव के रूप में भी मनाते हैं।

सरस्वती को साहित्य, संगीत, कला की देवी माना जाता है। सरस्वती की वीणा संगीत की, पुस्तक विचार की और मयूर वाहन कला की अभिव्यक्ति है। आम भाषा में सरस्वती को शिक्षा की देवी माना गया है। शब्द के माधुर्य और रस से युक्त होने के कारण इनका नाम सरस्वती पड़ा। सरस्वती ने जब अपनी वीणा को झंकृत किया, तो समस्त सृष्टि में नाद की पहली अनुगूंज हुई। चूंकि सरस्वती का अवतरण माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को हुआ था, अतः इस दिन को वसंत पंचमी के रूप में मनाया जाता है। मां सरस्वती को ज्ञान, बुद्धि, कला और कौशल की देवी माना जाता है. यही वजह है ज्ञान के पिपासु लोग मां सरस्वती का आशीर्वाद पाने के लिए उनकी वंदना करते हैं। मां सरस्वती हमें विद्या और ज्ञान अर्जित करने के अलावा और भी कई महत्वपूर्ण संकेत देती हैं। देवी सरस्वती के संपूर्ण आभा मंडल से हमें जीवन पथ पर सफलता पाने के अनेक संकेत मिलते हैं। श्वेत वस्त्रों में मां सरस्वती बेहद आकर्षक और तेजस्वी नजर आती हैं। उनका प्रिय रंग श्वेत है जो सात्विकता, सहजता और सरलता का प्रतीक है। देवी सरस्वती के श्वेत वस्त्रों से हमें दो संकेत मिलते हैं। पहला, हमारा ज्ञान निर्मल हो। हमें जो भी शिक्षा और ज्ञान मिले वह सकारात्मक हो। दूसरा, हमारा चरित्र अच्छा हो। हमारे जीवन में किसी भी प्रकार की बुराई न हो।

ऋग्देव में भगवती सरस्वती का वर्णन करते हुए कहा गया है–''**प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वजिनीवती धीनामणित्रयवतु**''। अर्थात ये परम चेतना हैं। सरस्वती के रूप में ये हमारी बुद्धि, प्रज्ञा तथा मनोवृत्तियों की संरक्षिका हैं। इसमें जो आचार और मेधा है उसका आधार भगवती सरस्वती ही हैं। इनकी समृद्धि और स्वरूप का वैभव अद्भुत है। पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण ने सरस्वती से खुश होकर उन्हें वरदान दिया था कि वसंत पंचमी के दिन तुम्हारी भी आराधना की जाएगी और यूं भारत के कई हिस्सों में वसंत पंचमी के दिन विद्या की देवी सरस्वती की भी पूजा होने लगी जो आज तक जारी है।

महर्षियों और मनीषियों ने कहा है कि वसंत पंचमी को पूरी श्रद्धा से सरस्वती की पूजा करनी चाहिए। माना जाता है कि इसी दिन शब्दों की शक्ति मनुष्य की झोली में आई थी। बच्चों को इस दिन अक्षर ज्ञान कराना और बोलना सिखाना शुभ माना जाता है। अतः सरस्वती देवी की इस वार्षिक पूजा के साथ ही बालकों के अक्षरारंभ एव विद्यारंभ की तिथियों पर भी सरस्वती पूजन का विधान है। वसंत पंचमी को श्री पंचमी भी कहा जाता है जो सुख, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने का परिचायक है। इस दिन पतंग उड़ाने की भी परंपरा है जो मनुष्य के मन में भरे उल्लास को प्रकट करने का माध्यम है।

हिन्दू धर्म में पीले (वासंती) रंग को शुभ माना गया है। वासंती रंग शुद्ध और सात्विक प्रवृत्ति का परिचायक है। यह सादगी और निर्मलता का भी प्रतीक है। वसंत पंचमी के दिन वासंती यानी पीले रंग के वस्त्र धारण करने के साथ पीले रंग के चावल, पीला रायता, वासंती पूरियाँ, पीले लड्डू व केसर की खीर बनाई जाती है। माँ सरस्वती को श्वेत रंग पसंद है और चावल सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। इसीलिए इस दिन माँ सरस्वती को चावल का भोग लगाया जाता है। देवी सरस्वती कमल के फूल पर विराजमान दिखती हैं। जिस तरह से कमल का फूल पानी में रहता है लेकिन पानी की एक भी बूंद उस पर नहीं रुकती उसी तरह से झूठ, कपट, बुरी संगत जैसी बुराइयों का जीवन में कोई स्थान न रहे।

वसंत पंचमी में सूर्य उत्तरायण होता है, जो यह संदेश देता है कि हमें सूर्य की तरह गंभीर और प्रखर बनना चाहिए। सभी ऋतुओं में वसंत ही ऐसी ऋतु है, जिसमें सभी ऋतुओं की अपेक्षा धरती की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। इस दौरान फसल पकती है। पेड़–पौधों में नई कोपलें फूटती हैं। वसंत पंचमी पर अबूझ मुहूर्त होने के कारण कई जोड़े परिणय सूत्र में बंध जाते हैं। इस दिन अबूझ सावा होता है यानी विवाह के लिए किसी पंडित से मुहूर्त निकलवाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। यह दिन अपने आपमें ही खास माना जाता है तथा इस दिन हुए मांगलिक कार्य जीवन भर शुभता प्रदान करते हैं। वसंत पंचमी यानी प्रकृति के उत्सव का दिन। वीणा वाहिनी माँ सरस्वती की आराधना का यह पर्व मंद–शीतल वायु के प्रवाह, प्रकृति की पीली चुनरी के साथ नए उत्साह के संचार का संदेश लाता है। वसंत पंचमी के पीछे एक मान्यता यह भी है कि इसी दिन भागीरथ की तपस्या के चलते गंगा का अवतरण हुआ था, जिससे समूची धरती खुशहाल हो गई। माघ माह के शुक्ल पक्ष में पड़ने वाली पंचमी पर गंगा स्नान का काफी महत्व है।

वसंत पंचमी के बारे में यह भी मान्यता है कि इस दिन शिवजी ने पार्वती से विवाह के लिए हामी भरी थी। इस दिन शिवजी का लगन चढ़ा था। प्राचीन काल में वसंत पंचमी का दिन मदनोत्सव और वसंतोत्सव के रूप में मनाया जाता था। इस दिन स्त्रियां अपने पति की पूजा कामदेव के रूप में करती थीं। वसंत पंचमी के दिन ही कामदेव और रति ने पहली बार मानव हृदय में प्रेम एवं आकर्षण का संचार किया था और तभी से यह दिन वसंतोत्सव तथा मदनोत्सव के रूप में मनाया जाने लगा। वसंत पंचमी इस बात का संकेत देती है कि धरती से अब शरद की विदाई हो चुकी है और ऐसी ऋतु आ चुकी है जो जीव जंतुओं तथा पेड़–पौधों में नवजीवन का संचार कर देगी।

भारतीय संस्कृति में अलग–अलग ऋतुओं का अपना महत्व है। हमारे व्रत और त्योहार ऋतुओं के साथ–साथ चलते हैं। वसंत ऋतु की पंचमी तिथि का अपना पौराणिक और धार्मिक महत्व है। वसंत पंचमी प्रकृति का यौवन है। जिसका रहन–सहन प्रकृति से अलग न पड़ गया हो। जो प्रकृति के रंग में रंग गया हो। वह मनुष्य बिना कहे ही वसंत पंचमी का अनुभव करता है। अलबत्ता वह एक ही समय पर सबके हृदयों में प्रवेश नहीं करता। वसंत पंचमी के दिन से ही होली आरंभ हो जाती है और उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाई जाती है। इस दिन से होली और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। लोग वासंती वस्त्र धारण कर गायन, वाद्य एवं नृत्य में विभोर हो जाते हैं।

'भारतीय गणराज्य के सबसे बड़े महानायक'

मंजिरी 'निधि'
स्वतंत्र लेखन
बड़ौदा, गुजरात

हमारे भारत का इतिहास असंख्य वीर पुरुष एवं वीरांगनाओं की वीरगाथा का खजाना है और यही कारण है कि हमारी भारत माता सदैव पूजनीय रही। इन्हीं में से एक भारतीय गणराज्य के सबसे बड़े महानायक छत्रपति शिवाजी हुए।

शिवाजी का जन्म 19 फरवरी 1630 में शिवनेरी किले में हुआ। उस समय उनके पिता शाहजी राव भोसले बीजापुर सुल्तान की सेवा के सेनापति थे। माँ जीजा शिवाई देवी की भक्ति थी। जीजामाता यवनों के अत्याचार से छुटकारा पाने हेतु शिवाय देवी से बेटे की मन्नत मांगी जो पूर्ण हुई। उन्होंने अपने बेटे का नाम शिवाजी रखा।

जिजाऊ ने शिवाजी को पाल–पोसकर बड़ा किया। इन्हें युद्ध कला सिखाई। बचपन से ही दादाजी कोंडादेव मां जीजा माता ने उनके अंदर स्वराज की लो जलाई, स्वतंत्रता का असली अर्थ समझाया और वीरता का बीज इस नन्हे बालक के मन में रोप दिया।

यह उस समय की बात है जब हमारे भारत पर हरे रंग का पर्दा पड़ा हुआ था। संपूर्ण भारत में युवनों के झंडे लहरा रहे थे। ना चाह कर भी हिंदुओं को यवनों की सेवा में भर्ती होना पड़ रहा था। हिंदू राजा युद्ध में परास्त हो रहे थे क्योंकि उनके अपने ही मंत्री विश्वास घाती हो रहे थे।

जीजाऊ ने यवनों को भारत से उखाड़ फेंकने का निश्चय किया। इधर पिता शाह जी भोसले निजाम सल्तनत में काम करके तंग आ चुके थे। अपने ही हाथों अपने लोगों की जान लेना उनसे नहीं हो पा रहा था। इसलिए उन्होंने मराठा राज्य की स्थापना करने की बहुत

कोशिश की पर यमन अति बलवान होने से कोशिश नाकाम हो गई और बतौर सजा उन्हें दक्षिण में भेज दिया गया। बड़े बेटे संभाजी भोसले भी अपने पिता के साथ दक्षिण चले गए और अफजल खान के साथ युद्ध करते हुए दोनों काल के ग्रास बन गए। जब इन दोनों की मौत का समाचार मिला तब शिवाजी सिर्फ 14 वर्ष के थे। जीजाऊ ने शिवाजी को मार्गदर्शन दिया और सतत उनकी प्रेरणा स्रोत बनी।

उन्हीं दिनों में उनकी मुलाकात स्वामी रामदास समर्थ जी से हुई। शिवाजी ने इन्हें अपना आध्यात्मिक गुरु माना। स्वामी समर्थ अध्यात्म के साथ उनके राजनीतिक जीवन के दिशा निर्देश भी देने लगे। शिवाजी को मातृभूमि पर गर्व करना इन्होंने ही सिखाया। जीजाऊ ने शिवाजी को हिंदू समाज का संरक्षक बनाने की ठानी। शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ। परंतु अपने चहुँओर बलाड्य सत्ताधारी, क्रूर राजनीतिक एवं युद्ध शास्त्र में पारंगत लोग थे। इसलिए शिवाजी को अपना राज्य स्थापित करने हेतु असंख्य पापड़ बेलने पड़े।

शिवाजी प्रजा का हित चाहते थे स आप धर्म सहिष्णु थे। आपके युद्ध शैलियाँ, युद्ध प्रणालियाँ दूसरे राजाओं से बहुत ही भिन्न थीं स आपने समर विद्या, छापा मार युद्ध और गोरिल्ला युद्ध पद्धति को विकसित किया।

शिवाजी कट्टरता और उद्दंडता का हमेशा ही विरोध करते रहे। मराठा साम्राज्य की नींव रखने वाले शिवाजी प्रथम राजा थे।

सिर्फ 16 वर्ष की आयु में आपने आदिलशाह से तोरणा किला जीता। आपने हिंदू राजनीतिक प्रथाएं, दरबारी आचार व्यवहार तथा मराठी एवं संस्कृत भाषा को राज्य की भाषा घोषित किया। भारत के उत्तर में मुगल, दक्षिण में बीजपुर और गोलकुंडा के मुस्लिम सुल्तान सभी शक्तिशाली शासक थे, जो लोगों पर जुल्म उठा रहे थे। जबरदस्ती लोगों का धर्म परिवर्तन कर रहे थे। धार्मिक उत्पीड़न भी कर रहे थे। ऐसे में देश को समाज को मुसलमानों के उत्पीड़न से बचाने हेतु इन्होंने अपनी सेना का विस्तार किया। इनकी सेना में एक तिहाई मुस्लिम सैनिक थे। मुस्लिम सरदार व सूबेदार भी थे।

शिवाजी ने अपने राज्य में घोषणा करवाई कि हिंदू धर्म, कर्म, संस्कृति एवं परंपराओं का सम्मान हो। जोर के बल पर धर्म परिवर्तन ना हो।

तोरना किला जीतने के पश्चात इन्होंने पुरंदर रायगढ़ करते–करते 225 किले जीते। कोंडाना किला जीतने पर उनके सिंह जैसे सूबेदार तानाजी मालुसरे की मृत्यु हुई यही कारण था कि उन्होंने कोंडाना किले का नाम बदलकर सिंहगढ़ क नाम दे दिया।

पुरंदर किला इन्होंने औरंगजेब से विद्रोह कर जीता। आदिलशाह की मृत्यु के पश्चात औरंगजेब ने बीजापुर पर आक्रमण कर दिया और शिवाजी ने औरंगजेब पर धावा बोल दिया। शाहजहां के कहने पर औरंगजेब को दिल्ली वापस जाना पड़ा जहां औरंगजेब ने अपने ही पिता शाहजहां को जेल में डालकर स्वयं शासक बन बैठा स और इस तरह पुरंदर किला शिवाजी के पास सुरक्षित रहा।

शिवाजी ने रामनगर से कारवार तक अपने शौर्य गाथा से भगवा लहरा दिया और मुगलों के राज्य में हिंदू साम्राज्य स्थापित करने वाले एकमात्र राजे की पदवी के हकदार बने।

लंबी बीमारी के चलते अपने साम्राज्य को अपने पुत्र संभाजी राजे भोसले के नाम कर 1680 में इन्होंने अंतिम सांस ली। ■

वर्षा बीती सर्दी आई

डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

वर्षा बीती सर्दी आई मन भाई ऋतु आई,
गरमागरम चायकॉफी की चुस्की लेते भाई।
घर से जल्दी नहीं निकलते ओढ़े रहें रजाई,
दिनमें काम निपटतें हैं सब रात कहीं न जाई।

नए नए पकवान बनें घर गर्म पकौड़ी खाई,
हीटर और अंगेठी जलती ठंड की है तरुणाई।
सनसन चले बयार शीत की शीतलता गहराई,
खो खो खेलें शाम को बच्चे द्वारद्वार अंगनाई।

बड़े बुजुर्ग सब जाड़ से ठिठुरे बैठे धुनी रमाई,
बालयुवा विस्मित बोलें सब कहां से सर्दी आई।
जाड़ा कहता है सब सुन लो युवा हमारे भाई,
वृद्धों को हम नहीं छोड़ते गर ओढ़े सात रजाई।

युवकों को मनभाती है ऋतु बड़ी सुहानी आई,
मनबांछित पकवान हैं खाते खाकर खूबपचाई।
शीतल जल पीने से डरते पशु पक्षी नर नारी,
अपने घर घोंसले में जाते होते शाम ये चारी।

रात चांदनी शरतपूर्णिमा मन ही मन मुस्कायी,
अमृत वर्षे पयसकलश से तनमन जन हर्षायी।
पूर्णचंद्रमा के प्रकाश में जगमग धरती सारी,
राकापति ने शुभ्रज्योत्स्ना जलथल में विस्तारी।

धन्य अयोध्या धाम

डॉ. सुमन मिश्रा
झांसी

अमर सदा ब्रह्मांड में, प्रभु की कीर्ति अशेष।
भाव समर्पित कर रही, उर के 'सुमन' विशेष।।

अवध नगर सब सज गया, ...आये हैं श्री राम।
पाकर प्रभु की चरण रज, धन्य अयोध्या धाम।।

अवध नगर सब सज गया, दीप जलायें लोग।
स्वागत है श्री राम का, ...आया है शुभ योग।।

रामचंद्र आये अवध,............ हर्षित है संसार।
नेहिल उर के योग से, ... दीपक जले हजार।।

कण–कण सारा राम मय, ...राम सृष्टि आधार।
दीप जलाएं नेह का, ...अपने घर के द्वार।।

राम नाम के जाप से, ...मिट जाते भव फंद।
अनुरागी मन जब हुआ, ...पाया परमानंद।।

राम रसायन मंत्र का, ...अमृत कीजिए पान।
जिसको पीकर हो गए, ...तुलसीदास महान।।

शबरी सी श्रद्धा रखें, ...मानें कभी न हार।
न जाने किस रूप में, ...आ जायें प्रभु द्वार।।

हम सब की यह जीत है, आज मनाएं जश्न।
ध्वस्त कर दिए कोर्ट ने, सभी विवादित प्रश्न।।

घी के दिये जलाइये, ..शुभ दिन आया आज।
मानो फिर से मिल गया, हमको राम स्वराज।।

देवालय श्री राम का, बना अवध अभिराम।
मां सीता के साथ में, ...वहां विराजे राम।।

जीत हुई है सत्य की, झूठ पराजित आज।
न्यायालय ने सत्य को, ..पहनाया है ताज।।

स्वर्णाक्षर अंकित हुआ, आज नया इतिहास।
श्रद्धा वा विश्वास का, दिवस बना यह खास।।

दो अक्षर में है निहित,... ..रामायण का सार।
जय बोलो श्री राम की,... हो जायें भव पार।।

हृदय से श्री राम का, ...करते हम सत्कार।
दीप जलाकर नेह का,..... .रखा देहरी द्वार।।

जिनके उर में राम हैं, ... प्रभु चरणों में धाम।
राम भक्त हनुमान को,.....मेरा कोटि प्रणाम।।

विपदाओं से न डरें, ...रखें भरोसा ईश।
शरण जाइए राम की,...... रक्षा करें कपीश।।

'सुमन' समर्पित कर रही, राम तुम्हें उर भाव।
भवसागर से पार प्रभु,.. कर देना बिन नाव।।

28 फरवरी पर विशेष

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

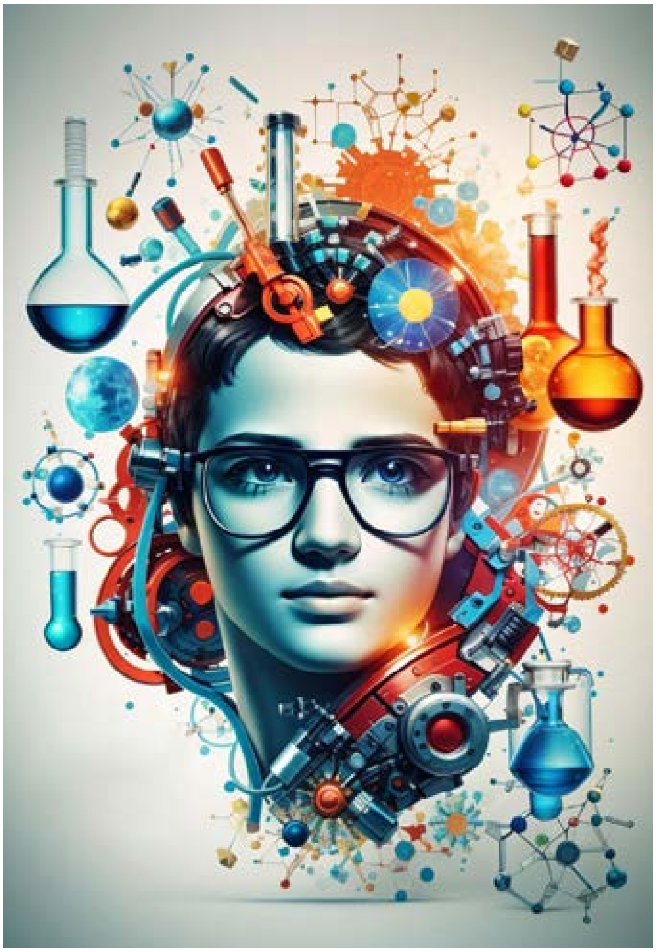

श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा
उपसम्पादक (अध्यात्म संदेश)
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
राजकीय विद्यालय, लखनऊ

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस भारत की विकास यात्रा में सम्मिलित एक वार्षिक राष्ट्रीय उत्सव है जिसमें विज्ञान मेला, सेमिनार एवं भाषण जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य युवाओं में विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करना जिससे वे विज्ञान क्षेत्र में अपना विशेष योगदान दे सकें। साथ ही देश के वैज्ञानिकों द्वारा मानव कल्याण के संवर्धन हेतु किये जा रहे अथक प्रयासों, उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियां और मूल्यवान गतिविधियों को प्रदर्शित किया जाता है।

भारत में आर्यभट्ट, चंद्रशेखर वेंकट रमन, होमी जहांगीर भाभा आदि अनेकों वैज्ञानिकों ने अपने आविष्कारों एवं महत्वपूर्ण योगदानों से विश्व के पटल पर भारत को गौरवान्वित किया है। इन्हें उनके अपने–अपने क्षेत्र में दिए गए वैज्ञानिक खोजों के लिए सदैव सराहा गया है एवं सम्मानित किया गया है, चाहे वह भौतिक विज्ञान हो, रसायन विज्ञान हो, अंतरिक्ष विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान हो अथवा संख्या का विज्ञान गणित हो। इन्हीं वैज्ञानिकों में से एक थे श्री चंद्रशेखर वेंकट रमन जो की एक प्रख्यात भौतिक शास्त्री थे, उन्होंने अपनी पहचान 'रमन प्रभाव' नामक महत्वपूर्ण खोज से बनाई थी जिसके अनुसार 'प्रकाश की प्रकृति और स्वभाव में तब परिवर्तन होता है जब प्रकाश पुंज एक पारदर्शी माध्यम से होकर गुजरता है, यह माध्यम ठोस, द्रव और गैसीय कुछ भी हो सकता है तो इस घटना के अन्तर्गत माध्यम के अणुओं से प्रकाश ऊर्जा का कुछ भाग प्रकीर्णित हो करके अपने मार्ग से विचलित हो जाता है, ऐसा उसके तरंग दैर्ध्य में बदलाव के कारण होता है'। प्रकाश की इस घटना को 'रमन प्रभाव' का नाम दिया गया। इस महत्वपूर्ण खोज के लिए उन्हें सन् 1930 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित

किया गया तथा भारत सरकार ने सन् 1954 में उन्हें भारत रत्न की सर्वोच्च उपाधि से सुशोभित किया गया था।

डॉक्टर सी वी रमन का जन्म चेन्नई के तिरुचिरापल्ली में 7 नवंबर 1888 को शिक्षण के क्षेत्र में अग्रणी एक ब्राम्हण परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री चंद्रशेखर रामनाथन अय्यर गणित एवं भौतिक विज्ञान के शिक्षक थे एवं उनकी माता श्रीमती पार्वती अय्यर थी, जिन्हें उनके पति ने ही पढ़ना लिखना सिखाया था। बचपन से ही सी वी रमन की विज्ञान विषय के प्रति रुचि थी, उनमें विषय के प्रति जुनून और कुछ नया सीखने एवं जानने की अतृप्त जिज्ञासा थी, जिसने उन्हें एक उच्च वैज्ञानिक बनने के लिए प्रेरित किया। 1907 में वे मद्रास (चेन्नई) विश्वविद्यालय से भौतिकी विषय में एम.एससी. की डिग्री प्राप्त की साथ ही अपनी योग्यता के बल पर और अंग्रेजी विषय और भौतिक विज्ञान में वे स्वर्ण पदक से सम्मा. नित किए गए। वह प्रथम एशियाई एवं गैर श्वेत व्यक्ति थे जिन्हें 28फरवरी 1930 में 'रमन प्रभाव' की असाधारण खोज पर नोबेल पुरस्कार मिला था। यह इतने प्रतिभाशाली थे कि सन् 1929 की भ. ारतीय विज्ञान कांग्रेस के सोलहवीं सत्र के अध्यक्ष भी रहे। 1933 में वे बेंगलुरु में 'भारतीय विज्ञान संस्थान' के पहले भारतीय निदेशक नियुक्त किए गए। भारत सरकार द्वारा सन 1954 में इन्हें सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'भारत रत्न' प्रदान किया गया था। सन् 1941 में इन्हें फ्रैंकलिन मेंडल से सम्मानित किया गया। इसी के साथ इन्हें सन् 1957 में लेनिन शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया था।

'राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद' तथा 'विज्ञान एवं वैज्ञानिकी मंत्रालय' द्वारा विज्ञान के प्रति समाज में जागरूकता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संवर्धन हेतु 28 फरवरी को 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के रूप में मनाया जाता है क्योंकि 28 फरवरी 1928 को ही श्री सी वी रमन ने अपनी खोज रमन प्रभाव की घोषणा की थी, इसी अद्भुत खोज के लिए 28 फरवरी 1930 में उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनके इसी बहुमूल्य योगदान को याद करते हुए 28 फरवरी 1987 को भारत में प्रथम राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया था। तभी से यह विशेष दिवस को निरन्तर मनाया जाता है।21नवम्बर 1970को यह चमकता हुआ सितारा अपनी ज्ञान विज्ञान की रोशनी से संसार को प्रकाशित कर स्वयं अस्त हो गया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को विज्ञान विषय के प्रति आकर्षित करना एवं जन जन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का संचार करना एवं नित नवीन खोजों के लिए प्रेरित करना तथा जनसाधारण को विज्ञान की दैनिक जीवन में उपयोगिता एवं विज्ञान की उपलब्धियों के प्रति जागरूक करना है क्योंकि वैज्ञानिक सोच के अभाव में विकास की राह में अनेकों बाधाएं आती हैं। गलत धारणाओं जैसे जादू, टोना टोटका एवं अन्धविश्वास के राक्षस को विज्ञान रूपी हथियार से ही नष्ट किया जा सकता है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस जैसे आयोजन समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रचार प्रसार में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होते हैं। आधुनिक तेज रफ्तार जिंदगी को आसान बनाने में विज्ञान ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है जैसे कि समय की बचत, सुविधापूर्ण रहन सहन, सहज और सरल जीवन शैली, सामाजिक सुरक्षा इत्यादि को विज्ञान ने बहुत आसान बना दिया है।

किसी भी देश के बच्चे उसे देश का भविष्य होते हैं अतः देश के विकास में तीव्रता लाने के लिए सर्वप्रथम उन्हीं से शुरुआत करना उचित होगा, जिसके लिए उनकी विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाना एवं उन्हें दैनिक जीवन में विज्ञान के महत्वपूर्ण योगदान से अवगत कराना आवश्यक है। 'राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद' द्वारा समय–समय पर विज्ञान एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संवर्धन हेतु विभिन्न वैज्ञानिक गतिविधियों से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन होता है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर सभी विज्ञान संस्थान,

विज्ञान अकादमी, स्कूल कॉलेज तथा अन्य संस्थानों में विभिन्न वैज्ञानिक गतिविधियों से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। सरकारी संस्थाओं के साथ–साथ गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा भी इस दिन को अत्यंत जोश और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इन आयोजनो में वैज्ञानिक भाषण, निबंध लेखन, विज्ञान प्रश्नोत्तरी, विज्ञान प्रदर्शनी, सेमिनार एवं संगोष्ठी आदि सम्मिलित होते हैं। विज्ञान के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार एवं अन्य पुरस्कारों की घोषणा भी की जाती है। भारत सरकार द्वारा वैज्ञानिकों को उनके सराहनीय योगदान के लिए राष्ट्रपति के माध्यम से सम्मानित किया जाता है। इस दिन देश और समाज के कल्याण हेतु अनेकों वैज्ञानिक योजनाओं की घोषणा की जाती है साथ ही उनका शुभारंभ भी किया जाता है।

वर्तमान में भारत के भविष्य की नींव विज्ञान, अनुसंधान एवं विकास पर आधारित है। भारतीय वैज्ञानिकों का विज्ञान के प्रति समर्पित जीवन और उनके महत्वपूर्ण योगदान देश में प्रौद्योगिकी विकास तथा राष्ट्र निर्माण के साथ–साथ गहरी मौलिक अन्तर्दृष्टि के एकीकरण का गौरवपूर्ण उदाहरण रहा है। वर्तमान में भारत अपने वैज्ञानिकों के अथक प्रयास से विश्व की सबसे बड़ी वैज्ञानिक एवं तकनीकी शक्ति वाला देश बन चुका है। सरकार के सहयोग एवं समर्थन के साथ वैज्ञानिक अनुसंधान से शिक्षा, ऋषि, स्वास्थ्य, अंतरिक्ष अनुसंधान, जैव ऊर्जा एवं परमाणु ऊर्जा आदि विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त निवेश के माध्यम से उन्नति एवं विकास हुआ है। 'केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी' राज्य मंत्री (एस. एण्ड टी.) डॉक्टर जितेंद्र सिंह द्वारा इस वर्ष 28 फरवरी 2024 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम 'सतत विकास के लिए बुनियादी विज्ञान' निर्धारित की गई है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के महत्वपूर्ण अवसर पर देश के युवाओं एवं जनसाधारण से निवेदन किया है कि महत्वपूर्ण वैज्ञानिक दिवस को मात्र एक दिवस में सीमित न करके नियमित रूप से सतत् जारी रखना चाहिए। कोविद के विश्वव्यापी खतरे को देखते हुए यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी और भी प्रासंगिक हो गयी थी, साथ ही जनसाधारण का विज्ञान पर विश्वास बढ़ गया था। भारत ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों में भी जन शांति और विकास के लिए 10 नवंबर को प्रतिवर्ष 'विश्व विज्ञान दिवस' के रूप में मनाया हैं। इस वर्ष 28 फरवरी 2024 के राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर हम सब का दायित्व है कि समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जागृत करें एवं नई पीढ़ी में विज्ञान विषय के प्रति रुचि और आकर्षण का बीजारोपण करें जिससे वे भविष्य में उत्कृष्ट वैज्ञानिक बनकर देश और समाज की सेवा में अपना योगदान कर सके। साथ ही सरकार का कर्तव्य है कि वह देश के प्रतिभावान और उत्कृष्ट वैज्ञानिकों को सम्मान एवं सहयोग देकर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें, जिससे वे अग्रिम शोधों एवं अनुसंधानों के लिए विदेश पलायन न करके अपने ही देश को गौरवान्वित कर सके।

जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान। ■

भारत

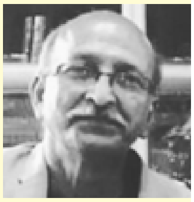

डॉ. अ किर्ति वर्द्धन
मुजफ्फरनगर

राष्ट्र के विकास पर, जो प्रहार कर रहे,
धर्म से विकास पर, अवरोध खड़े कर रहे।
संकुचित नजरिया, तुष्टिकरण पोषक हैं,
राम के काज बाधक, दुष्टता जो कर रहे।

राम भरोसे देश चलता, कालनेमि मर रहे,
राम का नाम सुन ही, राक्षस दल डर रहे।
अयोध्या प्रतीक धरा पर, साक्षात स्वर्ग की,
देखकर वैभव यहाँ, राक्षस विलाप कर रहे।

एक दिन अवकाश से, कहते जीडीपी हिल गयी,
अयोध्या के विकास से, कहते जीडीपी हिल गयी।
रोज रोज हड़ताल कर, जो विकास गति रोकते थे,
धर्म की बात चली तो, कहते जीडीपी हिल गयी।

भारत का मान जिसनें, विश्व को बता दिया,
भारत की सामर्थ्य क्या, जग को जता दिया।
भारत की अर्थव्यवस्था, सदैव से बेहतर बनी,
विश्व गुरू भारत ही है, जगत को पता दिया।

"किसी एक इंसान की मदद करने से दुनिया तो नहीं बदलने वाली हैं। लेकिन जिस इंसान की आप मदद करोगे उसकी दुनिया जरूर बदल सकती है।"

आज के परिप्रेक्ष्य में श्री राम

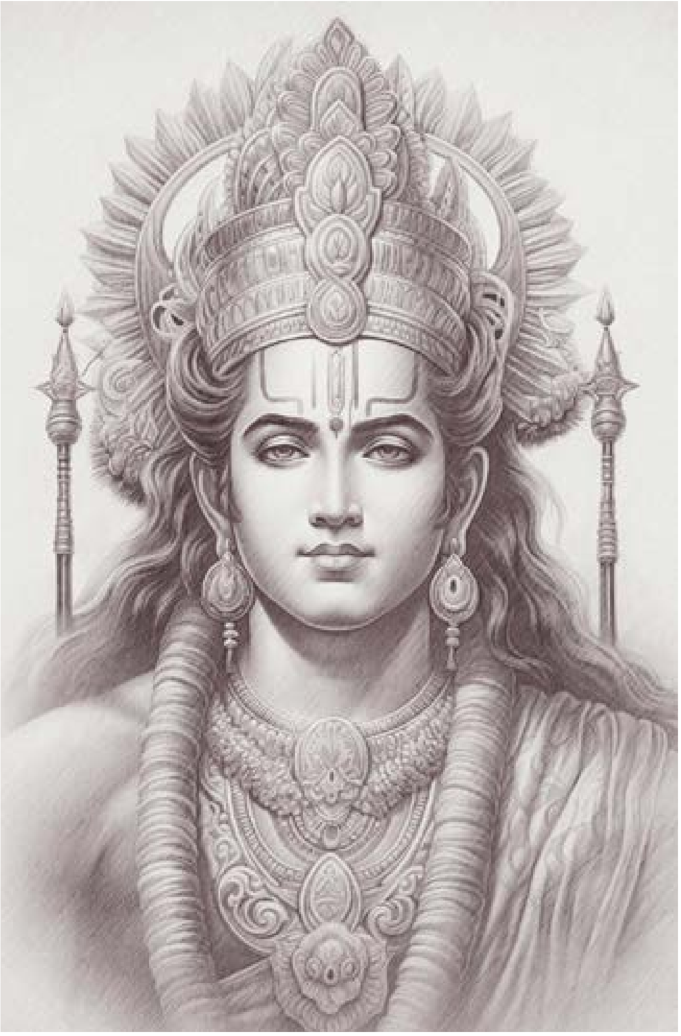

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

हरि अनंत हरि कथा अनंता, कहहि सुनहि बहु विधि सब संता।

गोस्वामी तुलसीदास जी की इन पंक्तियों से विदित होता है कि वर्तमान समय में राम की प्रासिंगकता अत्यधिक हो गई है। भगवान राम को सीधे तौर पर एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया जा सकता है जो उत्तम, नैतिक और सामाजिक व्यवहार प्रदर्शित करता है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में भगवान राम सत्य, नैतिकता, आदर्श पुत्र, आदर्श पति, और सबसे बढ़कर आदर्श राजा की अवतार हैं। वे बुराई पर सत्य की विजय का प्रतीक हैं।

भारतीय मानस में राम की प्रासंगिकता इसलिए नहीं है कि उन्होंने अंतहीन मुश्किलें झोली वरन उनका महत्व इसलिए है कि उन्होंने उन तमाम मुश्किलों का सामना बहुत ही शिष्टता पूर्वक किया। अपने सबसे मुश्किल क्षणों में भी उन्होंने खुद को बेहद गरिमा पूर्ण रखा। उस समय में एक बार भी ना तो वे क्रोधित हुए, न किसी को दोष रोपण किया ना घबराए या उत्तेजित हुए। हर स्थिति को उन्होंने बहुत ही मर्यादित तरीके से संभाला। इसलिए जो लोग मुक्ति व गरिमा पूर्ण जीवन की आकांक्षा रखते हैं, उन्हें राम की शरण लेनी चाहिए।

श्रीराम में यह देख पाने की अपूर्व क्षमता थी कि जीवन में घरेलू एवं बाह्य परिस्थितियां कभी भी विपरीत हो सकती हैं, यदि ऐसा हुआ तो वे इसे शिष्टता पूर्वक निपटने के लिए कृत संकल्प थे।

राम के दृष्टिकोण में निहित सूझबूझ ही उनकी आध्यात्मिक शक्ति व आचरण की प्रेरणा थी। राम की पूजा की आवश्यकता इसलिए नहीं कि हमारी भौतिक इच्छाएं बंगला, घर, प्रमोशन, धन, वैभव मिले, वरन इसलिए है कि हम राम से प्रेरणा ले कि मुश्किल क्षणों में धैर्य पूर्वक बिना विचलित या उत्तेजित हुए विपत्ति का सामना कर सके।

राम का प्रत्येक कार्य हमारे विवेक को जगाता है, आत्म विश्वास बढ़ाता है और आपस में रिश्तो को सहेजने की कला भी सिखाता है। सर्व कल्याण सर्वे भवंतु सुखिनः को समझाता है। राम की कार्यप्रणाली को दूसरा नाम प्रजातंत्र है। श्री राम का अर्थ है संस्कृति, धर्म, राष्ट्रीयता और पराक्रम। नर से नारायण बनने की प्रक्रिया श्री राम। श्री विलास जोशी जी लिखते हैं

‘आपदामहतारम दातारम सर्वसंपदा,
लोकाभिरामम श्री राम भूयो नमोस्तुते।’

अर्थात जो राम विपदाएं हरते हैं एवं सर्व संपदाओं के दाता भी हैं, उन्हीं जग दुलारे राम को बारंबार प्रणाम है। राम के सिर्फ नाम को ही ले तो कितने ही जड़ जीवो का उद्धार श्री राम के नाम स्मरण से हो गया, इसकी गिनती असंभव है। अनेक ग्रंथ इतिहास पुराण में से किसी चीज का उतना प्रभाव न हुआ है, न होगा, जितना राम और राम नाम का हुआ। राष्ट्रों का उदय हुआ और अस्त हुआ, राज्यों का विकास हुआ फिर पतन हुआ। किंतु राम की सत्ता अबाधित रुप से विद्यमान है, और रहेगी यह बात वेदों ने भी कही है।

‘सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ,
नाम उचारे अमित खलु वेद विदित गुननाथ।’

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है जहां संयुक्त परिवार टूटने के बाद एकल परिवार भी टूट रहे है। शहरीकरण के कारण गावों का भाईचारा भी समाप्त हो चुका है। ऐसे में मनुष्यों में मानसिक संबल के लिए भटकाव ही है। निराश हताश मन पौराणिक साहित्य या रामकृष्ण भक्ति में ही मानसिक संतोष पाते हैं

राम भरोसे राम बल, राम नाम विश्वास।
सुरभित शुभ मंगल, कुशल मंगल तुलसीदास।

कहा जाता है कि बाइबल विश्व की अधिकांश भाषाओं में अनूदित ग्रंथ है। लेकिन बाइबल से भी अधिक राम कथा जन–जन में प्रचलित है। भारत ही नहीं अपितु दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों में राम कथा किसी न किसी रूप में प्रचलित है। आज बच्चे जब मनमानी करते हैं, बड़ों या स्वजनों का आदर नहीं करते तब राम का प्रसंग अति उपयोगी है कि उन्होंने बिना किसी प्रश्न के राज्य का लोभ त्याग कर वनवास स्वीकार किया और किसी को दोषी भी नहीं ठहराया।

राम और रामायण यह कल्पना हो या वास्तविक यह हमारे जीवन में, जीवन के हर पल में घुल मिल चुके हैं। कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक राम का नाम हमारी जड़ों तक पहुंचा हुआ है । जिससे हम विलग नहीं हो सकते।

तुलसी ममता राम सौ, समता सब संसार,
राग न रोष न दोष, दुख दास भये परवार।

ताड़का वध से प्रारंभ होकर रावण वध तक की कहानी में दुष्ट निग्रह एवं शिष्ट परिपालक का राम का स्वरूप ही दिखता है। जो वर्तमान प्रसंग परिपेक्ष के लिए अति उपयोगी है। राम भातृत्व प्रेम, मातृ–पितृ–भक्त, न्याय प्रियता एवं सब पर कृपालु रहकर क्षमाशीलता का संदेश देते हैं।

आज के समाज में ईर्ष्या, द्वेष, लालच, पूर्वाग्रह एवं हिंसा की भावना प्रबल है। श्री राम का चित्रकूट प्रवास हमें इन सब से ऊपर उठने की प्रेरणा देता है। जब वे दलित शबरी के झूठे बेर खाकर प्रसन्न होते हैं, जब वे हनुमान जी की सेवा से प्रसन्न होते हैं, जब वे बाली और सुग्रीव मे से सुग्रीव से मित्रता निभाकर बाली का वध कर देते हैं, जो सुग्रीव की पत्नी को जबरन अपने पास रखे हुए था।

राम के जीवन से हमें वसुधैव कुटुंबकम की प्रेरणा मिलती है। वर्तमान समय में हमें पग पग पर राम के जीवन से ही कष्टों व कठिनाइयां में मार्गदर्शन मिलता है। राष्ट्रीय कवि मैथिली शरण गुप्त ने राम को पथ प्रदर्शक के रूप में चित्रित किया है। श्री राम ऐसे आदर्श नेता, दलित उद्धारक, आदर्श भाई, आदर्श पुत्र, आदर्श राजा एवं आदर्श पुरुष थे ,जो हर पल हमें प्रेरणा देते हैं और सदैव ही देते रहेंगे। राम समय और कालचक्र से परे अद्भुत महाशक्ति के रूप में हर पल हमारे साथ हैं। ■

दर्पण जब चेहरे का दाग दिखाता तब हम दर्पण नहीं तोडते, बल्की दाग साफ करते हैं। ‘उसी प्रकार, हमारी कमी बताने वाले पर क्रोध करने के बजाय अपनी कमी को दूर करना चाहिए, न की कमी बताने वाले से रिश्ता तोडना चाहिए ।

``सूर्यकांत त्रिपाठी निराला'' ``विष पीकर अमृत बरसाने वाले कवि''

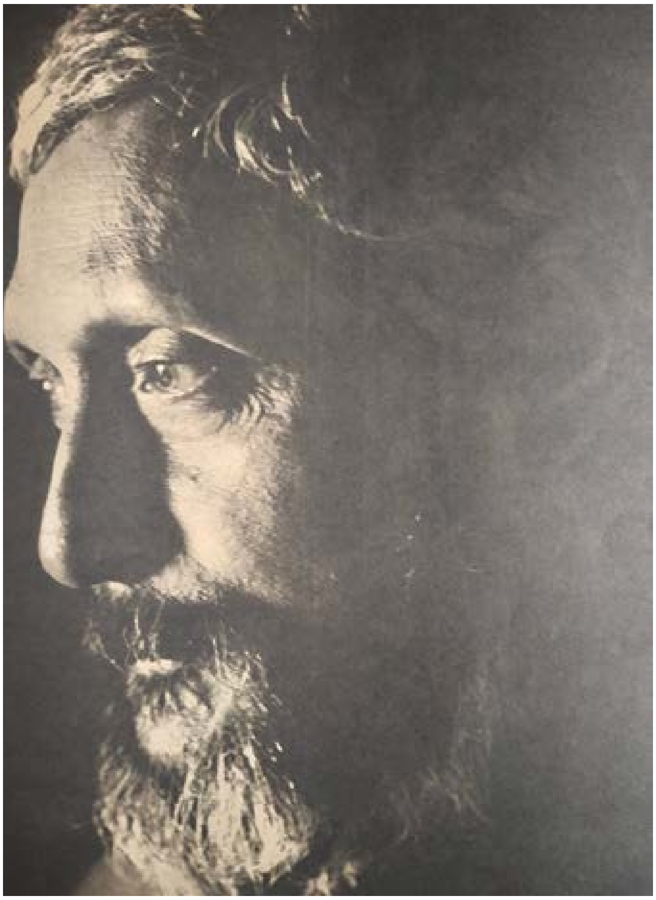

अनुराधा उपाध्याय
शोधार्थी हिन्दी
सि)ार्थ विश्वविद्यालय
कपिलवस्तु सि)ार्थ नगर

निराला जी का जन्म 21 फरवरी 1897 को बसंत पंचमी के दिन हुआ। इनकी औपचारिक शिक्षा हाई स्कूल तक हुई। तदुपरांत हिन्दी संस्कृति तथा बंग्ला का अध्ययन इन्होंने स्वयं किया। तीन वर्ष की आयु में ही मां की ममता से वंचित हो गये तथा युवावस्था से पूर्व ही पिता का साया छूट गया। बचपन में नैराश्य और एकाकी जीवन के पश्चात उन्होंने कुछ वर्ष पत्नी मनोहरा देवी के साथ बिताये। किंतु अल्पायु में ही पत्नी की मृत्यु हो गई। प्रथम विश्व युद्ध के बाद फैली महामारी में उन्होंने अपने पूरे परिवार को खो दिया। विषम परिस्थितियों में भी यह जीवन से समझौता न करते हुए अपने तरीके से जीवन जीना बेहतर समझा।

निराला की रचनाओ में ' अनामिका, ' कुकुरमुत्ता' कहानी मे ' सुकुल की बीबी', 'देवी' उपन्यास में, कुल्ली भाट', 'बिल्लेसुर बकरिहा' जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करती है। निराला ने राम का जो चित्र खोंचा है, वह वास्तव में निराला का ही चित्र प्रतीत होता है–

'दृढ़ जटा– मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर बाहुओ' पर, वक्ष पर विपुल।

अपने जीवन के विषाद विष अंधेरे को निराला ने जिस तरह से करुणा और प्रकाश में बदल वह हिंदी साहित्य में अद्वितीय है।

आनंद का अमृत 'निराला' की प्रारंभिक कविताओं में है, वेदना का विष बाद की कविताओं में है। अगर निराला के काव्य को देखें तो असंभव संभावनाओं से युक्त कविता 'राम की शक्तिपूजा' के राम वास्तव में निराला खुद है। ये उनके लिए ही मुमकिन था कि वे अपने राम में खुद को और स्वयं में राम को उतार लें और उसी राम को किसी मध्यवर्गी व्यक्ति का

रूप भी दें। हिंदी में या संभवत: विश्व की किसी भी भाषा में अर्थ चमत्कृत करने वाली कविता शायद ही हो।

निराला का साहित्य उनके व्यक्तित्व की दुहरी चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। वह मुक्त जीवन के अभिलाषी हैं। सामाजिक जीवन की रूढ़िग्रस्त नैतिकता के प्रति विद्रोही है। उनकी कला – चेतन प्रेमयुक्त है। यह उनके व्यक्तित्व का एक पटल है उनके व्यक्तित्व का दूसरा पटल संघर्षशील और यथार्थवादी प्रवृत्तियों को महत्व देता है।

निराला ने अपने साथ दुनिया के क्रूर छल और अपमान को भी सहा फिर भी वे कटु नहीं हुए जीवन के विष को अपना प्रारब्ध मानकर पीते रहे। "हिंदी साहित्य में निराला का होना हिंदी साहित्य का सौभाग्य हैं।"

निराला लिखते हैं –

'मेरे ही अविकसित राग से
विकसित होगा बंधु दिगंत
अभी न होगा मेरा अंत'

मन्दिर फिर वहीं बनाया है!

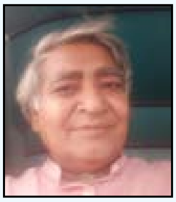

– **शीलेन्द्र कुमार वशिष्ठ**
आगरा

श्रीराम अवध में आए हैं,
सुर, नर, मुनि सब हरषाए हैं।
स्वागत में घर–घर दीप जले, असुरों ने मुँह लटकाए हैं।

बाबर ने मन्दिर तोड़ा था
भारत का मान मरोड़ा था
मन्दिर के ऊपर मस्जिद का
ढांचा बनवाकर छोड़ा था
पाँच सौ बरस तक मस्जिद के बाहर भगवान बिठाए हैं।।

हर बार नई सेना लाए
हिन्दू लेकिन मुँह की खाए
देवीदीन पांडे खेत रहे
कोठारी लौट नहीं पाए।
ढाँचे पर चढ़ने वालों के शव सरयू बीच बहाए हैं।।

'श्रीराम' का नारा जारी था
परिसर में पहरा भारी था
'पर नहीं परिंदा मारेगा'
ऐलान हुआ सरकारी था।
ढांचे की इक–इक ईंट कारसेवक अपने घर लाए हैं।।

अपवित्र सभी सद्ग्रंथ किए
भगवा को घाव अनन्त दिए
मारें नित डंक सनातन को
विषधर घूमें विषदन्त लिए।
'हैं राम काल्पनिक' असुरों ने कह रामभक्त भड़काए हैं।।

जो हुआ न, वह इस बार हुआ
त्रेतायुग फिर साकार हुआ
मन्दिर फिर वहीं बनाया है
राम का जहां अवतार हुआ।
उद्धार सनातन का करने मोदी और योगी आए हैं।।

संचित सौभाग्य हमारा है
देखा यह भव्य नजारा है
श्रीराम विराजे मन्दिर में
पुलकित सरयू की धारा है
इस क्षण में जीने को हमने कितने क्षण अश्रु बहाए हैं।।

चिड़ियों–से उड़ते यान यहाँ
जलपरियों–से जलयान यहां
यह अवधपुरी का वैभव है
सुरपुर की फीकी शान यहाँ।
हनुमानगढ़ी पर बजरंगी चौकन्ने गदा उठाए हैं।।

रोम रोम में रचे बसे हैं राम

सुजाता प्रसाद
स्वतंत्र रचनाकार
शिक्षिका सनराइज एकेडमी
नई दिल्ली, भारत

किसी देश की आत्मा उसकी अपनी सभ्यता और संस्कृति में बसती है और श्री राम की हमारे देश की संस्कृति में बहुत गहरी पैठ है। रोम रोम में रचे–बसे हैं राम, संपूर्ण धरती और अनंत व्योम में व्याप्त हैं राम। भारतीय संस्कृति की पहचान, भारत की परिभाषा, भारत की आत्मा और जन जन की आस्था के प्रतीक हैं राम। पुराणों में भी वर्णित है "रमंते सर्वत्र इति रामरू" यानी जो सभी जगह व्याप्त है वही राम है। जिसमें सबका मन रमता है और जो सबके मन में रमता है वही राम है। राम शब्द संस्कृत के दो धातुओं, रम् और घम से बना है। रम् का अर्थ है रमना या निहित होना। और घम का अर्थ है ब्रह्मांड का खाली स्थान। इस प्रकार राम का अर्थ सकल ब्रह्मांड में निहित या रमा हुआ तत्व है।

हमारी राष्ट्रीय आदर्शों और जीवन मूल्यों के प्रतिनिधि मर्यादा पुरुषोत्तम हैं श्री राम। अयोध्या में भगवान श्री राम के आगमन पर पूरा देश खुशी से झूम रहा है, देशवासी भाव विह्वल हो रहे हैं और सबकी आत्मा आनंद विभोर। जन जन को एकात्मकता के बंधन में बांधने वाले रक्षा सूत्र हैं राम। सनातन धर्म में प्रभु श्रीराम की पूजा मानव जीवन के आदर्श के प्रतीक के रूप में की जाती है। क्योंकि श्री राम से जब जीवन समर्पण की मांग करता है तो सहर्ष समर्पण करने के लिए तैयार रहते हैं। इतना ही नहीं जब राज पाट छोड़ने की बात हो तो राज्य भी सहज ही छोड़ देते हैं। उनके द्वारा उठाया गया हर एक कदम अतुलनीय है क्योंकि जब जब कदम उठाना होता है तो वे निर्णायक कदम उठाते हैं। समर क्षेत्र में जाना अनिवार्य हो तो युद्ध करना स्वीकार करते हैं। और इतना सब कुछ अपनी चेतना में संतुलित

होकर करते हैं, वो भी बिना किसी प्रतिक्रिया के। श्रीराम इस संस्कृति के प्रतिनिधि हैं, वो न्याय के प्रतिनिधि हैं। उनकी यही कोशिश रही कि लोगों को न्याय कैसे दें। और इस तरह से उनके द्वारा किए गए काम और मिली सकारात्मक उपलब्धि के कारण श्रीराम का समय एक प्रमुख कालखंड बन गया। श्रीराम के द्वारा स्थापित किए गए मानवीय और नैतिक मूल्य, धार्मिक और सांस्कारिक विचार, सामाजिक और राजनीतिक कार्य अतुलनीय थे और आज भी सर्वमान्य हैं।

आज हम जब रामराज्य की बात करते हैं तो हमारा मतलब होता है न्यायपूर्ण और उचित राज्य। राम राज्य आज भी प्रासंगिक है, लोकहितकारी है। माना गया कि न्याय पूर्ण राज्य के लिए राम की जरूरत होती है। बीते युग की तरह मानवता को ऐसे प्रतीक चरित्र की आज भी जरूरत है। ऐतिहासिक रामायण का काल प्राचीन भारत का सबसे गौरवशाली काल था। इस युग में पवित्र शास्त्रों, वेदों और अन्य साहित्य की रचना हुई जिसमें भारतीय संस्कृति और सभ्यता की झलक मिलती है। "रामराज्य" की विशेषता बताते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं–

दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।।

अर्थात रामराज्य में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं व्यापते। सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बताई हुई नीति (मर्यादा) में तत्पर रहकर अपने अपने धर्म का पालन करते हैं।

राम राज्य के शासनकाल में एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में श्री राम सदियों से कई कई पीढ़ियों तक हमें प्रेरित करते आ रहे हैं। श्री राम आज भी प्रासंगिक हैं और एक आदर्श के रूप में मानवता का साथ दे रहे हैं। अपनी प्रजा के लिए सर्वस्व त्याग करने वाले राजा ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारत को पूर्व से लेकर पश्चिम तक, उत्तर से लेकर दक्षिण तक जोड़कर अखंड राष्ट्र बनाने वाले राजा हैं भगवान श्री राम। सच मानें तो श्रीराम स्थिरता, संतुलन और शांति के प्रतीक चिह्न हैं। सचेतन व्यक्तित्व के रूप में संपूर्णता के द्योतक हैं। वास्तव में राम चेतना और सजीवता का प्रमाण है। राम जीवन का मंत्र हैं। राम गति का प्रतीक हैं। सत्यता के लिए आज भी अनुकरणीय हैं श्री राम, प्राण जाए पर वचन न जाए के रक्षक हैं राम। राम तो भारत के राष्ट्रीय स्वाभिमान हैं और श्री राम का मंदिर हमारा राष्ट्रीय गौरव।

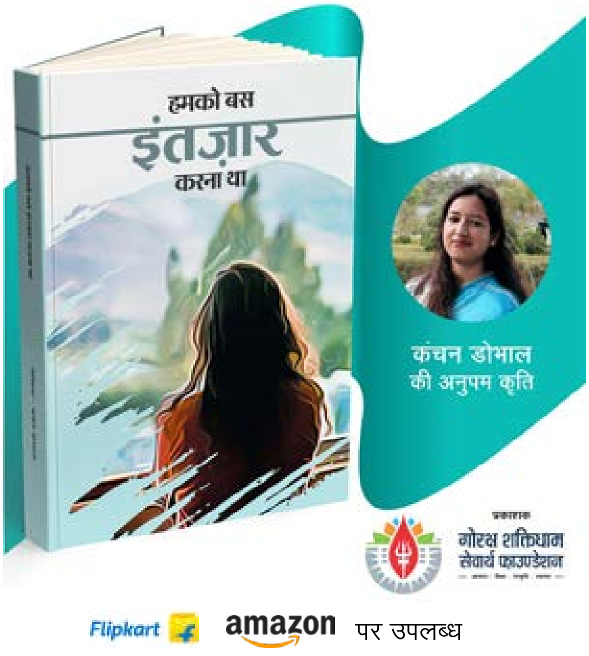

मेरे राम

डॉ. विद्यासागर मिश्र 'सागर'
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

पांच सौ बरस की तपस्या अब पूरी हुई,
जब मेरे राम निज घर पर आए है।

सारे देशवासी आज खुशियां मना रहे है,
निज द्वार पर सभी दीपक जलाएं हैं।

नगरी अयोध्या खूब सज धज कर खड़ी,
नगर के वासी सभी घर को सजाएं है।

गर्भ गृह पर राम लला हैं विराजमान,
देखकर देशवासी खूब हरसाएं हैं।।

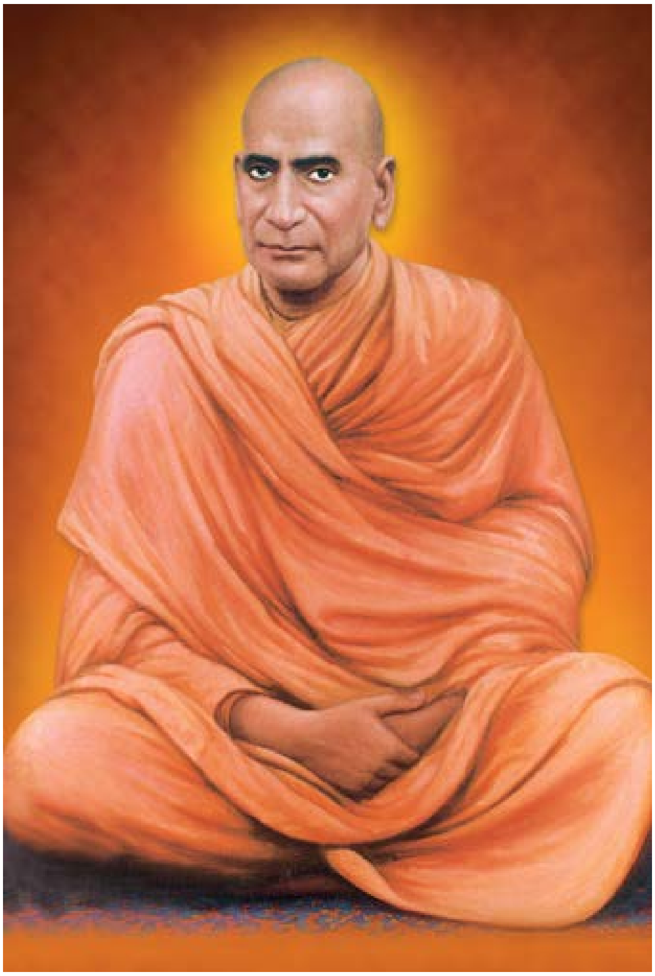

महान समाज सुधारक स्वामी श्रद्धानंद

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
स्वतंत्र लेखन
योग. प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ
(आयुर्वेद रत्न)
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

देश और समाजसेवा की बेदी पर बलिदान होने वाले स्वामी श्रद्धानंदजी का नाम भारतीय इतिहास में अमर है। स्वामी श्रद्धानंद का वास्तविक नाम मुंशीराम था। सन् 1917 ईस्वी में स्वामीजी ने संन्यास लेने के बाद अपना नाम श्रद्धानंद रखा।

स्वामी श्रद्धानंद पंजाब के जिला जालंधर के एक गांव तलवन के रहने वाले थे, वहीं 22 फरवरी, 1856 में जन्म हुआ था। स्वामीजी की शिक्षा–दीक्षा वाराणसी एवं प्रयाग में हुई थी। श्रद्धानंदजी के जीवन पर स्वामी दयानंद के कार्य एवं विचारों की अमिट छाप पड़ चुकी थी। उन्हीं दिनों स्वामी दयानंद देश के उद्धार एवं वेद के प्रचार का देशव्यापी कार्य कर रहे थे। उनकी ख्याति देश के कोने–कोने में फैल चुकी थी। श्रद्धानंदजी को पता चला कि स्वामी दयानंद बरेली आए हुए हैं। वह दयानंदजी से मिलने बरेली गए और ईश्वर के विषय में उनके मन में जो भी शंकाएं थीं उनका समाधान वह स्वामी दयानंद से करना चाहते थे। ईश्वर के विषय में उनके मस्तिष्क में शंकाएं उत्पन्न होने का कारण क्या था कि वाराणसी में घर–घर में मूर्ति–पूजा होती थी। श्रद्धानंदजी भी मंदिरों में जाते थे, मूर्तियों पर पुष्पमालाएं चढ़ाया करते थे। उनके जीवन की एक घटना ने उनके हृदय पर गहरी चोट पहुंचाई। कहा जाता है कि एक बार वह विश्वनाथ बाबा के मंदिर में उनके दर्शन हेतु जा रहे थे, मंदिर के पुजारी ने उन्हें रोककर कहा कि अभी देवास की रानी दर्शन कर रही हैं, उनके बाद तुम दर्शन करना। पुजारी के इन वचनों को सुनकर श्रद्धानंदजी के मन पर गहरा आघात पहुंचा। उन्होंने सोचा कि भगवान के दरबार में भी बड़े–छोटे का भेद है। अतः उन्होंने स्वामी दयानंद से यही कहा,

'मेरा अभी तक ईश्वर पर विश्वास नहीं हुआ है।'

स्वामी दयानंद ने कहा, जब परमात्मा की कृपा होगी तब तुम्हारा विश्वास भी हो जाएगा।' स्वामीजी के इन वचनों उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, अतः वह आर्यसमाज के सदस्य बन गए और अंत तक आर्यसमाज की सेवा करते रहे।

स्वामी श्रद्धानंद आत्मसम्मान के प्रेमी थे। कुछ समय तक वे नायब तहसीलदार रहे, किंतु एक अंग्रेज अधिकारी द्वारा अपमान किए जाने पर उन्होंने नायब तहसीलदारी से त्यागपत्र दे दिया। वह स्वतंत्र रहकर देश और धर्म की सेवा करना चाहते थे। आर्यसमाज की सेवा उन्होंने तन– मन से की। वे सदा यही चाहते थे कि जो आर्यसमाज का 'कल्पतरु' स्वामीजी ने लगाया है, वह मुरझाने न पाए। उन्होंने अपने जीवन में सभी तामसी विचारों को त्याग दिया और सही अर्थों में महात्मा बन गए।

देश में शिक्षा का प्रचार करने के लिए उन्होंने गुरुकुल की स्थापना की। इसकी निर्माण के लिए उन्होंने व्याख्यान दिए, धन इकट्ठा किया और हरिद्वार के निकट गंगातट पर कांगड़ी गांव में गुरुकुल की स्थापना की। इस गुरुकुल से संस्कृत भाषा प्रारंभ से पढ़ाई जाती थी। अध्यापक और छात्र एक ही स्थान पर एक साथ रहते थे। ब्रह्मचर्य का पूर्णतया पालन किया जाता था। आज स्वामी श्रद्धानंद का स्वप्न साकार हो गया, गुरुकुल आज विश्वविद्यालय बन चुका है।

स्वामी श्रद्धानंद ने भारत में हिंदू जाति के उत्थान के लिए अकथनीय प्रयत्न किया। उन्होंने शुद्धि और संगठन दो कार्यों पर विशेष बल दिया। यही नहीं जब 1919 ईसवी में देश पर विपत्ति आई तब उन्होंने भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस को भी सहायता प्रदान की। 23 दिसंबर, 1926 को एक दुष्ट व्यक्ति की गोली के शिकार हो गए और संसार से विदा हो गए। देश के महान समाज–सुधारक और भारतीयों को संगठित करने वालों में स्वामी श्रद्धानंद का नाम सदा ही अमर रहेगा।

कुछ अलग करना है, तो भीड़ से हट कर चलो, भीड़ साहस तो देती है, पर पहचान छीन लेती है..!!

शबरी बनकर...

व्यग्र पाण्डे
माधोपुर (राजस्थान)

शबरी बनकर के अयोध्या
सदियों से निहार रही थी
आयेंगे श्रीराम एक दिन
राह रोज बुहार रही थी

दिखने लगे हैं सगुन खूब
जंगल मंगल होने लगे हैं
मुस्कराने लगी दिशाएं
फूल अब खिलने लगे हैं

होने लगा है भान उसको
लगता आ रहे राम प्यारे
भक्तवत्सल करुणानिधि
जो जी रही जिनके सहारे

बूढ़े तन में शक्ति आई
हाथ बजन उठा रहे हैं
राम आ रहे राम आ रहे
बोल उसके गा रहे हैं

पैर में थिरकन मची है
बूढ़ी आंखों में चमक है
पदचाप राम के आने की
कानों में आ रही धमक है

शबरी सम जिया जीवन
अयोध्या ने भी की प्रतिक्षा
राम आते हैं अवश्य भक्तों
देते ये पल सबको शिक्षा।

बच्चे सीखें भगवान श्रीराम के जीवनादर्श

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ

वर्तमान में भारत सहित समस्त विश्व चारित्रिक दुर्बलता की व्याधि से पीड़ित है। आए दिन समाचार–पत्रों में वीभत्स दुर्घटनाओं के समाचार भरे रहते हैं। इन कुप्रभावों से बच्चे भी अछूते नहीं हैं। वे हत्या, दुष्कर्म, ठगी, अपहरण, चोरी, आत्महत्या, धूम्रपान, नशासेवन, लवजिहाद जैसी अनैतिक गतिविधियों के शिकार हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि बच्चों को आदर्श जीवन जीने के संस्कार नहीं मिल रहे हैं। उनमें मानवता के गुण न रहकर दानवता के दुर्गुण बढ़ रहे हैं। वे अपनी सनातन संस्कृति से कट चुके हैं और आधुनिकता के चक्कर में उन्मुक्त जीवन शैली एवं पाश्चात्य संस्कृति के चंगुल में फँस चुके हैं।सोशल मीडिया द्वारा परोसी जा रही अश्लीलता में लिप्त होकर किशोर दिगभ्रमित हैं। मोबाइल की बुरी लत ने उन्हें सद्ग्रंथों से दूर कर दिया है और वे सतही मनोरंजन में आनंद का अनुभव कर रहे हैं।इससे अपरिपक्व मस्तिष्क के बच्चों का चारित्रिक पतन हो रहा है।

भारतीय संस्कृति सदैव से मानवमात्र के लिए कल्याणकारी रही है। चरित्र निर्माण की सीख के लिए हमें भटकने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हमारे समक्ष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जैसे महानायक का जीवन चरित्र आदर्श रूप में प्राप्त है।

बाल्यकाल चरित्र – शिक्षा का समुपयुक्त समय है। इन वर्षों में हम जो सीख लेते हैं, उसका प्रभाव जीवनभर हमारे साथ रहता है और हमारे आचरण एवं कार्य – व्यवहार को प्रभावित करता है। बालक को सच्चरित्र बनाने में अच्छी आदतों, परिस्थितियों और शिक्षाओं का योगदान होता है। अतः बालक को श्रीराम जैसे उत्तम चरित्र से ओतप्रोत होना चाहिए, इसके लिए उसे उक्त दिशा का पथिक बनना चाहिए। श्रीराम ने संयमित, अनुशासित, अध्यवसाय और कर्म–निष्ठ जीवन के जो आदर्श प्रस्तुत किए, वे हर बच्चे के लिए उपयोगी और प्रेरणादायी हैं।

बचपन से ही संयमित दिनचर्या : श्रीराम बचपन से ही ब्रह्ममुहूर्त में जागते थे। अपने माता–पिता, गुरुजन तथा अपने से बड़ों को सम्मान देते थे। उनकी आज्ञा के अनुसार ही सारे कार्य करते थे। उनके इन गुणों के कारण लोग अत्यंत हर्षित होते थे। मनुस्मृति में कहा गया है कि बड़े – बूढ़ों की वंदना तथा सेवा करने से आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होती है।

श्रीराम साधारण बालकों की तरह सखाओं के साथ खेलते–कूदते भी थे और स्वाध्याय भी चालू रखते थे। वे सद्ग्रंथों का अध्ययन करते थे और श्रीगुरु से श्रवण भी करते थे। वे अपनी विनय, नम्रता, सुशीलता और सहज स्नेह से बचपन से ही लोकप्रिय हो चले थे।

श्रीराम की मातृभक्ति : माता कौशल्या सहित माता कैकेयी और सुमित्रा के प्रति उनका महान आदरभाव था। माता कैकेयी ने उनको कठोर वचन कहे और वन में जाने का आदेश दिया। माता कौशल्या ने आपसे कहा कि 'पिता से, माता की आज्ञा बढ़कर होती है, इससे तुम वन न जाओ।' तब आपने उन्हें माता कैकेयी की आज्ञा बतलायी। उन्होंने माता कैकेयी की कभी निंदा नहीं की।

अनूठी पितृभक्ति : पिताश्री दशरथ की स्पष्ट आज्ञापालन हेतु श्रीराम ने पिता का संकेत मात्र पाकर प्रसन्नतापूर्वक 14 वर्ष के लिए अयोध्या त्याग कर दिया। श्रीदशरथ जी ने वन – गमन के लिए स्पष्ट शब्दों में आज्ञा नहीं दी थी, कैकेयी माता की आज्ञा में उनकी मौन सम्मति मात्र थी, तथापि आपने पिता के वचनों का सम्मान करते हुए वन – गमन को स्वीकार किया।

आदर्श गुरुभक्ति : मुनि विश्वामित्र जी श्रीराम के शिक्षागुरु थे। वे अपने गुरुवर की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे।वे श्रीगुरु के जागने के पहले ही जाग जाते थे, उनके लिए फूल इत्यादि लाते थे। छोट – मोटे काम भी गुरु की आज्ञा से ही करते थे। श्रीगुरु के शयन करने पर चरणसंवाहन करते और उनकी आज्ञा पाकर ही स्वयं शयन करते थे। मुनि वशिष्ठ जी कुलगुरु थे, वे उनकी सेवा करना भी अपना सौभाग्य समझते थे।

अतुलनीय भ्रातृप्रेम : श्रीराम का भ्रातृप्रेम अतुलनीय था। बचपन से ही वे अपने भाइयों से अपार स्नेह करते थे। सदा उनकी रक्षा करते थे और उन्हें प्रसन्न रखते थे। श्रीराम को जो भी कोई उत्तम भोजन या वस्तु मिलती थी, उसे वे पहले अपने भाइयों को देकर पीछे स्वयं खाते या उपयोग करते थे। श्रीराम अपने भाइयों के साथ ही भोजन करते थे। वे अपने भाइयों का मन रखने के लिए खेल में हार भी जाते थे। उन्हें अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र होने का लेशमात्र भी घमंड नहीं था। वे अपने राज्य के प्रत्येक बच्चे के साथ मित्रता रखते थे और उनके साथ नित्य वन में खेलने जाते थे।

पशु – पक्षियों से प्रेम : बच्चे बहुत नटखट होते हैं। वे चिड़ियों पर ढेला फेंककर उड़ा देते हैं, हो – हो करके भगा देते हैं। पशुओं को मारते हैं या उन्हें तंग करते हैं। यह बुरी बात है, किसी जीव को सताना नहीं चाहिए, सदैव उनके प्रति दयाभाव रखना चाहिए। ऐसी सुंदर सीख भगवान श्रीराम ने दी है। उनके बचपन का एक दृष्टांत है। श्रीराम अपने महल में कौवे (काकभुशुंडि) के साथ खेल रहे थे। किलकारी मारते हुए जब वे काक को पकड़ने के लिए दौड़ते हैं तो काक उड़कर उनकी पहुँच से दूर हो जाता है। ऐसे में वे पुआ दिखाकर उसे बुलाते हैं। एक अन्य प्रसंग के अनुसार भगवान शिव राम के बाल रूप को देखने के लिए मदारी बनकर अयोध्या आते हैं। उनके साथ वानर रूप में हनुमान जी होते हैं। वानर को देखकर श्रीराम उन्हें पाने की हठ करते हैं तो राजा दशरथ ने मदारी बने शिव से वानर रूपी हनुमान को मांग लिया। इसके बाद बहुत दिनों तक हनुमान जी, श्रीराम के साथ रहे। वे बचपन से ही परम गोभक्त भी थे।

किशोरावस्था में श्रीराम : श्रीराम जब किशोरावस्था की ओर पदार्पण कर रहे थे, तो वे अपने भाइयों और सखाओं के साथ अयोध्या की गलियों में विचरण करते थे। हाथ में धनुष – बाण लिए हुए उनका मनमोहक रूप निरखकर नगरवासी अभिभूत हो जाते थे। वे सखाओं के साथ सरयू नदी में नौका विहार करते थे। किशोरावस्था में ही उन्होंने धार्मिक अनुष्ठानों में रत विश्वामित्र मुनि के यज्ञ – रक्षार्थ ताड़का और सुबाहु राक्षस का वध किया। वे शस्त्र और शास्त्र दोनों विषयों में पारंगत थे।

श्रीराम संपूर्ण विश्व के आदर्श हैं। इन्हीं आदर्शों की प्राप्ति के लिए मनुष्य – जाति राम – चरित्र को बार बार सुनती है और पढ़ती है। इस विलक्षण और शक्तिशाली चरित्र से मानवमात्र अपने दिन – प्रतिदिन के जीवन में मार्गदर्शन प्राप्त कर कृतकृत्य हो सकता है। बालकों को राम कथा पढ़कर और उस पर चिंतन – मनन करके, श्रीराम के चरित्र का अनुसरण करना चाहिए। शिक्षकों और अभिभावकों को भी चाहिए कि वे बच्चों को श्रीराम के उदात्त चरित्र की कथाएँ सुनाकर, उन्हें राम बनने के लिए प्रेरित करें। बालकों के चरित्र निर्माण से ही देश का समुचित विकास संभव है। आज के बच्चे ही देश के भावी कर्णधार हैं और वे ही सच्चा रामराज्य ला सकते हैं। ■

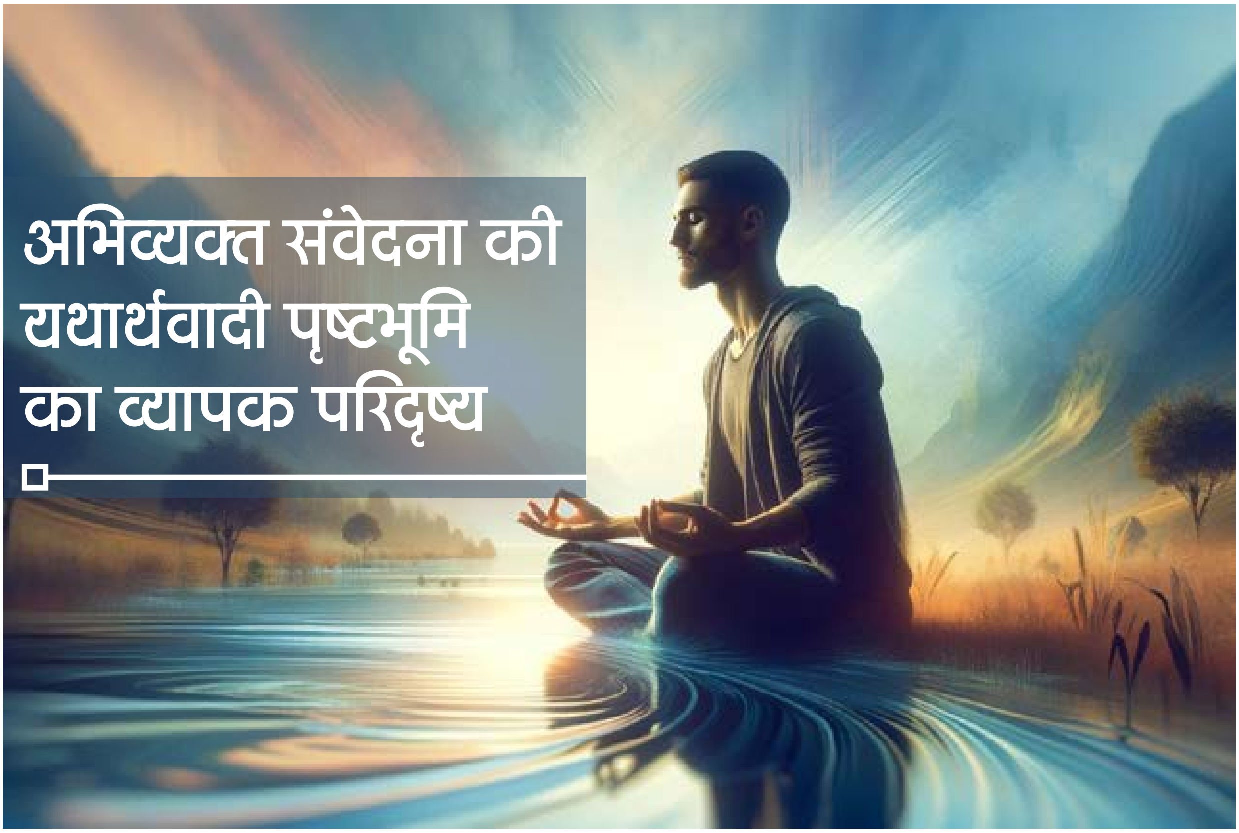

अभिव्यक्त संवेदना की यथार्थवादी पृष्ठभूमि का व्यापक परिदृष्य

डॉ. अजय शुक्ला
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर, स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर
देवास, मध्य प्रदेश

" सिया राम मय सब जग जानी : करहु प्रणाम जोरी जुग पानी "

"भारतीयता की पृष्ठभूमि में भारतीय आत्मा द्वारा "सर्व धर्म समभाव..." के उद्घोष को विराटता के सानिध्य में " बहुजन हिताय , बहुजन सुखाय..." की संस्कृति के माध्यम से संपूर्ण मानवता को सुखी बनाने के संदर्भित प्रसंग में "सर्वे भवंतु सुखिन: सर्वे संतु निरामया..." के सिद्धांत को प्रतिपादित करते हुए संपूर्ण विश्व को ही "वसुधैव कुटुंबकम..." की गरिमा के विहंगम स्वरूप में स्वीकार कर लेता है जिसमें विश्व गुरु भारत , द्वारा धर्म ग्रंथो से आलोकित" सिया राम मय सब जग जानी : करहु प्रणाम जोरी जुग पानी..." का महानतम संदेश समाहित रहता है। शुभ भावना एवं शुभ कामना के आत्मगत स्वरूप द्वारा सर्वगुण सम्पन्नता की उच्चता का निर्माण, अंत:करण में आत्महित से आरंभ होकर सर्व मानव आत्माओं के उन्नयन और उत्थान हेतु निरंतर गतिशील रहता है। आत्मगत समभाव की सुखद परिणिति, मानव जीवन शैली की गतिशीलता के रहस्य को उजागर करती है जिसमें गुणात्मक परिवर्तन एवं परिवर्धन हेतु 'राजयोग द्वारा आध्यात्मिक पुरुषार्थ की उपयोगिता ...' को संपूर्ण, समादर भाव से आत्मिक परिष्कार हेतु आत्मसात किया जाना आवश्यक होता है । आत्म ज्ञान की बोधगम्यता में 'सत्य दर्शन' की स्वाभाविकता, आत्मिक सम्पन्नता का बहुमुखी स्वरुप होता है जिसमें 'आत्मगत स्वभाव की सहजता एवं सरलता...' सामाजिक समरसता के माध्यम से निरंतर प्रवाहित होती रहती है।"

आत्मज्ञान अभ्युदय की नैसर्गिक अनुभूति : दिव्य गुणों से एवं शक्तियों से सुसज्जित मानव आत्माएँ सदा आत्मज्ञान के अभ्युदय की नैसर्गिक अनुभूति से गतिशील रहती हैं और अर्न्तमुखी अवस्था के लिए पुरुषार्थ करते हुए राजयोग का अनुकरण करके मौन स्वरूप में

परिवर्तित हो जाती हैं। जीवन में आत्मज्ञान के प्रस्फुटित स्वरुप से चेतना की चेतनता को संपूर्ण संचेतना की व्यापकता के साथ अनुभव किया जा सकता है जिसमें निमित्त, अकर्ता रूप का ज्ञायक भाव ही उपस्थित रहता है जो आत्मानुभूति की स्वतंत्रता को प्रतिपादित करता है। मनुष्य जन्म की सौभाग्यशाली स्थिति को सामर्थ्यवान अवस्था में परिणित करने हेतु आत्मबल का सहारा लिया जाता है जो आत्मिक शक्तियों की उपयोगिता को मन, वचन एवं कर्म के सात्विक स्वरूप से आत्मसात करने के प्रबल पुरुषार्थ में सुनिश्चित किया जाता है। आत्मज्ञान के अभ्युदय होने पर आत्मिक बोधगम्यता का परिवेश अभिवृद्धि को प्राप्त होते हुए, आत्मानुभूति के वृहद् परिदृश्य की ओर गतिशील होता है जहां से अतिइन्द्रिय सुख एवं शाँति की गहन अनुभूति, जीवात्मा द्वारा किया जाना सहज हो जाता है। जीवात्मा जब स्वयं को स्वानुभूति के रहस्यमयी स्वरूप में प्राप्त कर लेती है तब उसकी धन्यता का पक्ष आत्मानंद के संदृश्य परिलक्षित होने लगता है और वह आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति की ओर अग्रसर हो जाती है ।

सत्य दर्शन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण : जीवन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में "मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, आचार्य देवो भवः, सत्यं वद, धर्म चर.. " का अनुष्ठान करते हुए जब मानव जाति गतिशीलता की ओर अभिमुखित होती है तब 'सत्य दर्शन' का अलौकिक स्वरुप मानवीय संवेदनशीलता के रूप में प्रस्फुटित होता है। आत्मगत स्थिति की वास्तविकता को उसके मूलभूत अस्तित्व गुण "अजर, अमर, अविनाशी, अचल, अडोल एवं स्थितप्रज्ञ..." के नैसर्गिक रूप में ही स्वीकारना 'सत्य दर्शन' के प्रति श्रद्धावान होने की परिणिति है जिसमें आत्मा के स्वमान , स्वरुप एवं स्वभाव के अनुसार जीवन के ब्यावहारिक पक्ष को पूर्णतः आत्मसात करने की जीवंतता सन्निहित रहती है। सत्य दर्शन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण सदा ही लौकिक, अलौकिक एवं पारलौकिक स्वरुप के मध्य निर्धारित अन्तराल को मान्यता प्रदान करता है और स्वाध्याय में प्रमुख एवं गौण के अंतर्गत 'भेद – विज्ञान' का अनुपालन करते हुए आत्म तत्व का विश्लेष्णात्मक अध्ययन 'आत्म कल्याण' के संदर्भ तथा प्रसंग में किया जाता है। आत्मिक भाव, भासना के सानिध्य में निज, निधि – निजानंद के मंगल स्वरुप की अलौकिक चेतना – सत्यम, शिवम – सुन्दरम की पारलौकिक विराटता में सत, चित्त, आनंद अर्थात – सच्चिदानंद की अनुभूति में सम्बद्ध हो जाती है। 'सत्य ही ईश्वर है, ईश्वर ही सत्य है' का आध्यात्मिक स्वरूप मानव जीवन में सदा – 'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः ' अर्थात् हे प्रभु मेरे समीप चहुँ दिशाओं से पवित्र विचारों के आगमन का आह्वान करते हुए पुण्यात्मा, महात्मा, धर्मात्मा एवं देवात्मा, स्वरूप में स्थापित होने का पुरुषार्थ अनवरत गतिशील होता रहे।

आत्मिक संपन्नता के व्यावहारिक परिदृश्य : धर्म एवं कर्म के विधिवत निर्वहन से 'उपराम स्थिति' के निर्माण की पूर्णता चेतना का परिष्कृत स्वरूप है जिसमें जीवात्मा, कर्मबन्धन से मुक्त होकर आत्म वैभव की सत्यता का सहज अनुभव करती है। जीवन में कर्मयोग संपादित करते हुए स्वयं को आध्यात्मिक पुरुषार्थ की शक्ति से सदा, कर्म के संबंध से सुरक्षित रखने की उच्चतम प्राप्ति आत्मा के कर्मातीत अवस्था का सुखद परिणाम है जो आत्मिक सम्पन्नता के स्थायित्व को प्रतिपादित करता है। अव्यक्त स्वरुप की आत्मिक उपलब्धि जीवन की सर्वोच्चता का जीवंत प्रमाण है जो राजयोग से मौन की ओर गतिशीलता को सुनिश्चित करके 'आत्मा की सम्पूर्ण पवित्रता ' के व्यावहारिक परिदृश्य को स्थापित कर देता है। सर्वगुण सम्पन्नता की व्यावहारिकता को आत्मानुभूति के माध्यम से सदा आत्महित की संलग्नता के सानिध्य में 'आत्मगत चेतना की चेतनता ...' को बनाए रखना, जीवन के परिष्कृत स्वरुप हेतु किया जाने वाला 'आत्म केन्द्रित' स्वाध्याय होता है। जीवात्मा द्वारा प्रकृति के 'पंच तत्वों को पावन' बनाने की सेवा का – उत्तरदायित्व, आत्मिक सम्पन्नता के व्यावहारिक स्वरुप को 'आभारयुक्त उदारता के संवेदनशील दृष्टिकोण...' से पूर्णता प्रदान करने में मददगार सिद्ध होता है।

संपूर्ण समर्पण द्वारा सर्वगुण सम्पन्नता : जगत में आराध्य के प्रति 'भक्ति भाव से सम्पूर्ण– समर्पण' के व्यावहारिक उदाहरण दुर्लभ स्वरुप में विद्यमान है जिसका अध्ययन एवं विश्लेषण करने से भक्तिकालीन सभ्यता और संस्कृति के उच्चतम आयाम ' स्वान्तः सुखाय रघुनाथ गाथा ..' के व्यापक परिदृश्य में प्रतिबिम्बित होते रहते हैं । ज्ञान की बोधगम्यता से जुड़ी यथार्थ आत्मानुभूति जब – 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्..' के संदर्भ एवं प्रसंग की विशिष्ट भूमिका के सानिध्य में संपूर्ण समर्पण द्वारा प्रस्फुटित होती है तब – ' आत्मा स्वयं का ही मित्र..' बनकर आत्मिक वैभव सम्पन्नता की उच्चता प्राप्त करती है। शुभ भावना एवं शुभ कामना के आत्मगत स्वरूप द्वारा सर्वगुण सम्पन्नता की उच्चता का निर्माण, अंतःकरण में आत्महित से आरंभ होकर सर्व मानव आत्माओं के उन्नयन और उत्थान हेतु निरंतर गतिशील रहता है।

आत्मज्ञान युक्त भक्ति का पवित्रम स्वरूप : आत्मिक समृद्धि की मंगलकारी अवस्था सदा आत्मा के गुणों एवं शक्तियों से भरपूर रहती है जिसमें लोक कल्याणकारी भाव जगत की उपलब्धिपूर्ण गरिमामयी स्वरूप की विराटता का आभामंडल स्वमेव ही चहुँ दिशाओं में व्याप्त हो जाता है। परमात्म सत्ता के समक्ष सम्पूर्ण समर्पण, आत्मज्ञान युक्त भक्ति का पवित्रतम स्वरूप है जो आत्मिक परिदृश्य के सम्पूर्ण परिवेश को 'सर्वगुण सम्पन्नता' की नैसर्गिक उच्चता में रूपांतरित कर देता है। जीवन में ' धर्म कर्म ' के सामंजस्य से उपजने वाले 'सुखद संयोग' को जीवात्मा द्वारा आत्मसात् करते हुए जब ' आध्यात्म – पुरुषार्थ ' के संदर्भित, गरिमामई स्वरूप को "बड़े भाग्य मानुष तन पावा..." की व्याख्या के सानिध्य में व्यावहारिकता के साथ चरितार्थ कर देता है तब आत्मज्ञान युक्त भक्ति का पवित्रम स्वरूप आत्महितकारी स्वरूप में स्वयं सिद्ध हो जाता है।

आत्मगत समभाव में सामाजिक समरसता : समाज में शांति, अहिंसा एवं पवित्रता की स्थापना में – धर्म, अध्यात्म और राजयोग के अवदान को वैश्विक दृष्टिकोण से वृहद स्तर पर स्वीकारोक्ति प्राप्त हुई है जिसके परिणाम स्वरुप आत्मानुभूति के द्वारा "अहिंसक जीवन शैली की नैसर्गिक व्यावहारिकता... " आत्मगत समभाव के रूप में 'मानव समाज की समरसता' के माध्यम से प्रकट हो

सकी है। जीवन की शुचिता का नैतिक धर्म, आत्मगत चेतना के प्रति संवेदनशील दृष्टिगत मनोभाव अपनाते हुए सदैव श्रेष्ठ मानव व्यवहार के योगदान की उज्जवल पृष्ठभूमि को संपूर्ण मनोयोग से रेखांकित करता है ताकि नैतिकता के उच्चतम मानदंड की गरिमा को बनाए रखने में मदद प्राप्त हो जाए। आत्मगत समभाव की सुखद परिणिति, मानव जीवन शैली की गतिशीलता के रहस्य को उजागर करती है जिसमें गुणात्मक परिवर्तन एवं परिवर्धन हेतु "राजयोग द्वारा आध्यात्मिक पुरुषार्थ की उपयोगिता… " को संपूर्ण, समादर भाव से आत्मिक परिष्कार हेतु आत्मसात किया जाना आवश्यक होता है।

जीवात्मा के सर्वांगीण विकास की सुनिश्चितता : चेतना का परिष्कृत स्वरुप जब सत्कर्म की गतिशील प्रवृति के अनुकरण एवं अनुसरण की सत्यता को जीवात्मा के सर्वांगीण विकास की सुनिश्चितता के संदर्भ एवं प्रसंग में सम्प्रेषित करता है तब सामाजिक समरसता की प्रमाणिकता सहज ही स्थापित हो जाती है। आत्म ज्ञान की बोधगम्यता में 'सत्य दर्शन' की स्वाभाविकता आत्मिक सम्पन्नता का बहुमुखी स्वरुप होता है जिसमें "आत्मगत स्वभाव की सहजता एवं सरलता…" सामाजिक समरसता के माध्यम से निरंतर प्रवाहित होती रहती है। भारतीयता की पृष्ठभूमि में भारतीय आत्मा द्वारा " सर्व धर्म समभाव… " के उद्घोष को विराटता के सानिध्य में "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय…" की संस्कृति के माध्यम से संपूर्ण मानवता को सुखी बनाने के संदर्भित प्रसंग में " सर्वे भवंतु सुखिन: सर्वे संतु निरामया…" के सिद्धांत को प्रतिपादित करते हुए संपूर्ण विश्व को ही " वसुधैव कुटुंबकम…" की गरिमा के विहंगम स्वरूप में स्वीकार कर लेता है जिसमें विश्व गुरु भारत, द्वारा धर्म ग्रंथो से आलोकित "सिया राम मय सब जग जानी : करहु प्रणाम जोरी जुग पानी…" का महानतम संदेश समाहित रहता है ।

> **जीवन में इतना संघर्ष तो कर ही लेना चाहिये, कि अपने बच्चे का आत्मविश्वास बढाने के लिये, दूसरों का उदाहारण न देना पड़ जाये**

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई–पत्रिका

क्या आपकी लेखन में अभिरुचि है?

क्या आप भी कभी अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कागज – कलम उठाते हैं?
क्या आप लेखक/लेखिका, कवि/कवियत्री है?

आपको **अध्यात्म संदेश** ई पत्रिका की ओर से आमंत्रण है, आप अपनी रचनाएं, कविताएं, गीत, लघु कथाएं हमें प्रेषित करें। आपकी रचनांए आलेख प्रकाशन योग्य होने पर उसका पत्रिका में अवश्य प्रकाशन किया जाएगा।

अपनी रचनायें हमें प्रेषित करते समय यह अवश्य सुनिश्चित करें कि यह रचना आपकी अपनी मौलिक कृति है और न तो यह किसी पत्र – पत्रिका – पुस्तक – ब्लॉग – वेबसाइट आदि में प्रकाशनार्थ विचाराधीन है और न ही कभी प्रकाशित हुई है।

आपकी रचना को मूल रूप में प्रकाशित/संपादित रूप में प्रकाशित करने अथवा प्रकाशित न करने का पूर्ण विवेकाधिकार संपादक मंडल का है।

आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15 फरवरी 2024

विशेष : शब्द सीमा 500–750 शब्दों के मध्य होनी चाहिए

1. लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाइल में टाइप कराकर ही भेजे। पी. डी. एफ फाइल न भेजें।
2. लेखक/लेखिका अपनी स्वरचित अप्रकाशित एवं मौलिक रचना के साथ कृपया अपना संक्षिप्त परिचय, व्हाट्सप नंबर, फोटो के साथ भेजें ।
3. आपकी स्वीकृत रचना आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जायेगी। प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देय नहीं है।
4. जनकल्याण हित में ज्ञान वर्धन हेतु यह ई पत्रिका पूर्णत: नि: शुल्क है। अपनी रचनाएँ ई–मेल: **editor.adhyatmsandesh@gmail.com** पर प्रेषित करें।

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

जीवन में पश्चाताप से बचना है तो समय पर पहल करना सीखें

सीताराम गुप्ता
स्वतंत्र लेखन व विचारक
पीतम पुरा, दिल्ली

मैं जब भी किसी नए विषय पर कोई आलेख अथवा कथा–कहानी आदि लिखने बैठता हूँ तो लिखने से पूर्व प्रायः मन में ये विचार आता है कि ये रचना करना ठीक भी रहेगा या नहीं। कहीं संपादक, प्रकाशक अथवा पाठक इसे मजाक में न ले लें अथवा सतही रचना समझ कर नकार न दें। यदि मन में इस प्रकार का संशय पैदा हो जाता है तो प्रायः वह रचना आकार नहीं ले पाती लेकिन कुछ ही दिनों बाद उसी विषय पर प्रकाशित किसी अन्य रचनाकार की रचना देखता हूँ तो बड़ा अफसोस होता है कि मैंने उस दिन इस विषय पर क्यों नहीं लिखा। प्रकाशित इस रचना से पूर्व इस विषय पर मैंने कोई रचना नहीं देखी थी। यदि इस रचना से पूर्व इस विषय पर अन्य कोई रचना प्रकाशित नहीं हुई थी और मैं उस समय लिख लेता तो इस विषय पर लिखने वाला मैं पहला रचनाकार भी हो सकता था।

लेखन में ही नहीं जीवन के अनेकानेक क्षेत्रों में कई बार ऐसा ही होता है कि हम पहल करने अथवा समय पर निर्णय लेने से चूक जाते हैं। हम कोई कार्य, कोई नेक कार्य या कोई नया कार्य करना चाहते हैं लेकिन कोई संकोच या संशय हमें कार्य संपन्न करने अथवा पहल करने से रोक देता है। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि हम किसी अच्छे कार्य की पहल करने के श्रेय से वंचित रह जाते हैं और कभी–कभी तो बाद में या तो दोबारा उसे करने का अवसर ही नहीं मिलता या वह विचार ही विस्मृति के गर्भ में चला जाता है। संभव है इस कारण से लोग सचमुच किसी महान कृति, सिद्धांत अथवा खोज या अनुसंधान से वंचित ही रह जाएँ। इसीलिए जरूरी है कि किसी भी सकारात्मक व उपयोगी विचार को निश्शंक होकर यथाशीघ्र कार्यरूप देने का प्रयास किया जाए।

प्रायः हमारे समय पर पहल न करने अथवा निर्णय न लेने के गंभीर परिणाम भी हमें भुग. तने पड़ते हैं। कोई बात समय पर न कह पाने के कारण परिचितों के बीच उपजी गलतफहमियाँ

बढ़ती चली जाती हैं। किसी से मिलने जाने के निर्णय में देर करने पर संभव है कि उससे फिर कभी मिलना हो ही न सकें। मैं ही क्यों पहले बात करूँ या मिलने जाऊँ, ऐसे विचार जीवन में तबाही ला सकते हैं। एक छोटी सी पहल जीवन को सदा के लिए खुशियों से भर सकती है। समय पर कहा गया एक वाक्य हमारे अमूल्य संबंधों को टूटने से बचा सकता है। उचित समय पर किसी के कंधे पर रखा गया हाथ उसे टूटकर बिखरने से बचा सकता है। उर्दू शायर मुनीर नियाजी की एक नज़्म ''हमेशा देर कर देता हूँ मैं ...'' याद आ रही है। नज़्म की कुछ पंक्तियाँ देखिएरू

हमेशा देर कर देता हूँ मैं, हर काम करने में
जरूरी बात कहनी हो कोई, कोई वादा निभाना हो
उसे आवाज देनी हो, उसे वापस बुलाना हो
हमेशा देर कर देता हूँ मैं ...

किसी को मौत से पहले, किसी गम से बचाना हो
हकीकत और थी कुछ, उसको जा के ये बताना हो
हमेशा देर कर देता हूँ मैं ...

कई बार हम सोचते हैं कि हर विचार को कार्य रूप देना कहाँ संभव है और यही हमारी सबसे बड़ी भूल है। वास्तव में मनुष्य जो सोच सकता है वह कर भी सकता है अर्थात् मनुष्य जो कार्य नहीं कर सकता उसे सोचना ही असंभव है। असंभव से दिखने वाले ही नहीं, कई बार साधारण से कार्य को करने में भी हम कोताही बरतते हैं। कई बार फूल उगाने के लिए हम बीज खरीद लाते हैं। हम बीज तो खरीद लाते हैं लेकिन उन्हें गमलों या क्यारियों में बोने में कोताही बरतते हैं। फूलों का पूरा सीजन निकल जाता है लेकिन बीज बोने का फैसला नहीं कर पाते। क्या सचमुच यह बहुत मुश्किल कार्य है? वैसे भी ये क्या हम ही हैं जो बीजों से पौधे बनाते हैं और उन पर फूल खिलाते हैं? नहीं, हमें तो मात्र पहल करनी होती है। शेष कार्य प्रकृति स्वयं करती है। हम तो निमित मात्र होते हैं। फिर भी किसी कार्य को प्रारंभ करने अथवा पहल करने में इतना आलस्य और विलंब या संकोच अथवा दुविधा क्यों?

यदि बीजों को उसी समय मिट्टी के हवाले कर दिया होता तो आज उन फूलों के सौंदर्य, उनके रंगों और खुशबू से वंचित नहीं रहते। सामने के मकान की बालकनी अथवा टैरेस पर जब रंग–बिरंगे व सुगंधित पुष्प अपनी आभा बिखरने लगते हैं तभी हमें अपने समय पर निर्णय न लेने का अफसोस होता है लेकिन अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत। हमारे विचार भी बीजों की तरह ही होते हैं। उचित समय पर बीज बोने की तरह ही उचित समय पर मन में विचार रूपी बीजों को बोना व उन्हें कार्यरूप में परिणत करना भी अनिवार्य है अन्यथा अनेकानेक उपयोगी विचार अंतरिक्ष में उल्काओं की भाँति जलकर अस्तित्वहीन हो जाएँगे। किसी भी सकारात्मक व उपयोगी विचार को दृढ़ करके उसे फौरन कार्यरूप में परिणत करना हम सबके हित में होता है।

कई बार हम बहुत–सी अच्छी–अच्छी पुस्तकें खरीद लाते हैं और उन्हें अलमारियों में सजाकर रख देते हैं कि कभी आराम से पढ़ेंगे लेकिन वो दिन कभी नहीं आता। माना कि आप अत्यधिक व्यस्त हैं तो भी पढ़ने का समय निकालिए। पुस्तकें कितनी भी अच्छी क्यों न हों उनकी सार्थकता पढ़ने में है न कि मात्र खरीदने में। मान लीजिए कि हम पुस्तकें पढ़ते भी हैं। कई बार हम कोई अच्छी–सी प्रेरक पुस्तक पढ़ते हैं और हमें लगता है कि इसमें हमारे लिए कई जीवनोपयोगी सूत्र हैं जो हमारे जीवन की दिशा बदल सकते हैं। हम ऐसे जीवनोपयोगी सूत्रों को रेखांकित कर लेते हैं, उन्हें कंठस्थ कर लेते हैं लेकिन ऐसे सूत्रों की सार्थकता उन्हें रटने में नहीं अपितु फौरन व्यवहार में लाने में है। ज्ञान–विज्ञान से लाभांवित होना अपेक्षित है सिर्फ पढ़ना नहीं। इस प्रकार के निर्णय लेने के लिए हमें संशय व संकोच का फौरन त्यागकर क्रियान्वयन के लिए तत्पर हो जाना चाहिए।

क्या अच्छा है और क्या बुरा है ये हम सब भली–भाँति जानते है लेकिन अच्छे कार्य को करने के लिए हम जिस शुभ मुहूर्त की तलाश में रहते हैं वो कभी नहीं आता। अतः जब भी कोई नया, अनोखा या मौलिक विचार मन में आए सफलता–असफलता की परवाह किए बिना उसे कार्यरूप में परिणत करने के लिए कटिबद्ध हो जाएँ। इससे न केवल आपको उसका प्रवर्तक या संस्थापक होने का गौरव प्राप्त हो सकता है अपितु वह कार्य किसी के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण भी हो सकता है, किसी का जीवन भी बदल सकता है। जब भी कोई अच्छा कार्य करने का विचार मन में आए उसे फौरन कर डालिए क्योंकि संभव है कि बाद में समय, संसाधन अथवा अच्छे स्वास्थ्य के अभाव में यह कार्य करना ही असंभव हो जाए। किसी नेक काम को अंजाम देने का हमारा इरादा ही न बदल जाए इसलिए कहा गया है कि शुभ कार्यों को शीघ्र कर डालिए। जीवन में अफसोस करने की नौबत न आए इसलिए नेक कार्यों को करने का दृढ़ संकल्प लेकर उन्हें वास्तविकता में परिवर्तित कर दीजिए। ■

> **विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला आज तक कोई विद्यालय नहीं खुला ।**

श्रीकृष्ण कहलाये रणछोड़

सोनल मंजू श्री ओमर
राजकोट, गुजरात

श्रीकृष्ण भगवान का एक नाम रणछोड़ भी है। वैसे तो रणछोड़ एक नाम है लेकिन रणछोड़ का अर्थ होता है– 'युद्ध का मैदान छोड़कर भागने वाला।' पुराणों में मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण दो बार अपनी युद्ध स्थली छोड़कर भाग आये थे। तब उनके प्रतिद्वंद्वी ने उन्हें रणछोड़ कहा था।

वो पौराणिक कथाएँ कुछ इस प्रकार है कि जब भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मामा कंस का वध कर दिया तब कंस के ससुर जरासंध ने भगवान श्रीकृष्ण का वध करने का निश्चय कर के मथुरा नगरी में चढ़ाई कर दी। भगवान श्रीकृष्ण जानते थे कि यदि मथुरा में युद्ध हुआ तो बेचारे बेकसूर नगरवासी भी मारे जाएंगे। इसीलिए उन्होंने मथुरा छोड़ने का निश्चय कर सभी जनों के संग वहाँ से चले आये और समुद्र के मध्य में द्वारिका नगरी बनाकर सभी को सुरक्षित किया। मथुरा नगरी से भाग जाने के कारण जरासंध ने भगवान श्रीकृष्ण को रणछोड़ कहकर संबोधित किया।

जरासंध ने श्रीकृष्ण भगवान को पराजित करने के लिए कालयवन से मित्रता की, क्योंकि कालयवन को शिव जी द्वारा वरदान प्राप्त था कि उसे न तो कोई चंद्रवंशी मार सकता है न ही कोई सूर्यवंशी। न ही उसकी मृत्यु किसी हथियार से हो सकती है। इसीलिए जरासंध ने कालयवन को श्रीकृष्ण भगवान से युद्ध करने भेजा। इसीलिए जब कालयवन युद्ध करने आया तब श्रीकृष्ण भगवान वहाँ से भी भाग गए। तब कालयवन ने भी भगवान को 'रणछोड़' कहकर उनका अट्टहास किया था। श्रीकृष्ण भगवान भागते–भागते एक गुफा में छिप गए, और वो जिस गुफा में जाकर छुपे, उसमें पहले से ही इक्ष्वाकु नरेश मांधाता के पुत्र और दक्षिण कोसल के राजा मुचकुंद गहरी नींद में सोए हुए थे। दरअसल, उन्होंने असुरों से युद्ध कर देवताओं को जीत दिलाई थी। लगातार कई दिनों तक युद्ध करने की वजह से वह थक गए थे, इसलिए भगवान इंद्र ने उनसे सोने का आग्रह किया और उन्हें एक वरदान भी दिया, जिसके मुताबिक जो कोई भी उन्हें नींद से जगाएगा, वह जलकर भस्म हो जाएगा। इसीलिए श्रीकृष्ण भगवान ने सोये हुए राजा मुचकुंद पर अपना पीताम्बर ओढ़ा दिया ताकि कालयवन जब भगवान का पीछा करते–करते वहाँ पहुँचे तो उसे लगे कि भगवान लेटे है। और ऐसा ही हुआ, कालयवन ने राजा मुचकुंद पर प्रहार किया और जैसे ही राजा उठे उनके नेत्रों से एक अग्नि निकली जिससे कालयवन जलकर भस्म हो गया। और इस प्रकार श्रीकृष्ण भगवान के अनेक नामों की सूची में रणछोड़ नाम भी जुड़ गया।

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउण्डेशन
www.gssfoundation.org
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र

आह्वान है राम तुम्हारा

चेतना साबला
अंधेरी, मुंबई

करते है आह्वान राम तुम्हारा।
चले आओ छोड़ अपना वनवास
अयोध्या कर रही है इंतजार तुम्हारा
और भरत कर रहा तुमसे अरदास।

हुआ अवध का बुरा हाल,
माँ केकई भी करे हृदय मलाल।
अब तो जन–जन की है यही गुहार
कब आएँगे हमारे पालनहार

माँ जानकी राम लक्ष्मण भ्राता
तुम ही हो हमारे अन्नदाता।
अब तो संवाद भी गया है बीत
और क्या यही है रघुकुल की रीत।

बन जाए ये दिन भी त्यौहार
निवेदन करो हमारा स्वीकार
आप पधारें हमारे द्वार
और करें सबका उद्धार।

पीढ़ियों से थे राहें निहारे,
पीढ़ियाँ जग छोड़ गई,
कितनी भाग्यशाली है मेरी पीढ़ी
अयोध्या आज फिर से राममय हो गई

पांच सदियाँ, पचासों युद्ध,
हर रास्ता था अवरुद्ध,
फिर भी मन्दिर वहीं बनाये हैं।
रामलला जहाँ जाये हैं।

थे सबके नयन सूखे, अब आनंद निर भर आएँगे,
रोम रोम है पुलकित सब का, जन्मस्थान हम सजाएंगे।
राम अयोध्या आएँगे, सब पर कृपा बरसाएंगे
राम अयोध्या आएँगे, रामराज्य बनाएंगे।।

ज्योतिष क्या है ?

ज्योतिषमान जागृत जगत की एक ज्योति का नाम ही जीवन है। ज्योति का पर्याय ज्योतिष है अथवा ज्योतिस्वरूप ब्रह्म की व्याख्या का नाम ज्योतिष है। वेदरूप ज्योतिष ब्रह्मरूप ज्योति का ज्योतिष है जिसका द्वितीय नाम संवत्कर ब्रह्म या महाकाल है। .... *गतांक से आगे*

मंगल ग्रह – ज्योतिष विज्ञान में मंगल को शक्ति, पराक्रम, साहस, सेना, क्रोध, उत्तेजना, छोटे भाई, एवं शस्त्र का कारक माना जाता है। इसके अलावा यह युद्ध, शत्रु, भूमि, अचल संपत्ति, पुलिस आदि का भी कारक होता है। गरुड़ पुराण के अनुसार मनुष्य के नेत्रों में मंगल ग्रह का वास होता है। यदि किसी व्यक्ति का मंगल अच्छा हो तो वह स्वभाव से निडर और साहसी व्यक्ति होगा और उसे युद्ध में विजय प्राप्त होगी। परंतु यदि किसी जातक की जन्म कुंडली में मंगल अशुभ स्थिति में बैठा हो तो जातक को नकारात्मक परिणाम मिलेंगे। जैसे– व्यक्ति छोटी–छोटी बातों से क्रोधित होगा तथा वह लड़ाई–झगड़ों में भी शामिल होगा। ज्योतिष में मंगल ग्रह को क्रूर ग्रह की श्रेणी में रखा गया है। वहीं मंगल दोष के कारण जातकों को वैवाहिक जीवन में समस्या का सामना करना पड़ता है।

बुध ग्रह – वैदिक ज्योतिष में बुध को बुद्धि, तर्क, गणित, संचार, चतुरता, मामा और मित्र का कारक माना गया है। बुध एक तटस्थ ग्रह है। इसलिए यह जिस भी ग्रह की संगति में आता है उसी के अनुसार जातक को इसके परिणाम प्राप्त होते हैं। यदि कुण्डली मे बुध की स्थिति कमजोर होती है तो जातक को गणित, तर्कशक्ति, बुद्धि और संवाद में समस्या का सामना करना पड़ता है। जबकि स्थिति मजबूत होने पर जातक को उपरोक्त क्षेत्र में बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिलते हैं। बुध ग्रह मनुष्य के हृदय में बसता है। ज्योतिष के अनुसार बुध ग्रह का प्रिय रंग हरा है।

बृहस्पति ग्रह – ज्योतिष में बृहस्पति को गुरु के नाम से भी जाना जाता है। गुरु को शिक्षा, अध्यापक, धर्म, बड़े भाई, दान, परोपकार, संतान आदि का कारक माना जाता है। जिस व्यक्ति की कुंडली में गुरु की स्थिति मजबूत हो तो वह व्यक्ति ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी होता

पंडित कैलाशनारायण
ज्योतिषाचार्य
उज्जैन, मध्य प्रदेश

है। इसके अलावा उस व्यक्ति का स्वभाव धार्मिक होता है और उसे जीवन में संतान सुख की प्राप्ति होती है। वहीं यदि बृहस्पति कुंडली में कमजोर हो तो उपरोक्त चीजों में इसका नकारात्मक असर पड़ता है। बृहस्पति ग्रह को पीला रंग प्रिय है।

शुक्र ग्रह – शुक्र एक चमकीला ग्रह है। यह विवाह, प्रेम, सौन्दर्य, रोमांस, काम वासना, विलासिता, भौतिक सुख–सुविधा, पति–पत्नी, संगीत, कला, फैशन, डिजाइन आदि का कारक होता है। विशेष रूप से पुरुषों की कुंडली में शुक्र को वीर्य का कारक माना गया है। यदि किसी जातक की कुंडली में शुक्र की स्थिति मजबूत हो तो जातक को जीवन में भौतिक और शारीरिक सुख–सुविधाओं का लाभ प्राप्त होता है। यदि व्यक्ति विवाहित है तो उसका वैवाहिक जीवन सुखी व्यतीत होता है। वहीं यदि शुक्र कुंडली में कमजोर हो तो जातक को उपरोक्त क्षेत्र में अशुभ परिणाम देखने को मिलते हैं। शुक्र के लिए गुलाबी रंग शुभ होता है।

शनि ग्रह – शनि पापी ग्रह है और इसकी चाल सबसे धीमी है। अतः सभी ग्रहों में से इसके गोचर की अवधि बड़ी होती है। शनि गोचर के दौरान एक राशि में करीब दो से ढ़ाई वर्ष तक रहता है। इसलिए व्यक्ति को इसके परिणाम देर से प्राप्त होते हैं। ज्योतिष में शनि को आयु, दुख, रोग, पीड़ा, विज्ञान, तकनीकी, लोहा, खनिज तेल, कर्मचारी, सेवक, जेल आदि का कारक माना जाता है। यदि किसी जातक की कुंडली शनि दोष हो तो उसे उपरोक्त क्षेत्र में हानि का सामना करना पड़ता है। ज्योतिष में शनि का बहुत बड़ा प्रभाव होता है। व्यक्ति के शरीर में नाभि का स्थान शनि का होता है। शनि के लिए काले रंग के वस्त्र धारण किए जाते हैं।

राहु ग्रह – राहु एक छाया ग्रह है। ज्योतिष में राहु कठोर वाणी, जुआ, यात्राएँ, चोरी, दुष्टता, त्वचा के रोग, धार्मिक यात्राएँ आदि का कारक होता है। यदि जिस व्यक्ति की कुंडली राहु अशुभ स्थान पर बैठा हो तो उसकी कुंडली में राहु दोष पैदा होता है और उसे कई क्षेत्रों समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके नकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। अपने स्वभाव के कारण ही राहु को ज्योतिष में एक पापी ग्रह माना गया है। राहु का स्थान मानव मुख में होता है। राहु–केतु दोनों का सूर्य और चंद्रमा से बैर है और इस बैर के कारण ही ये दोनों सूर्य और चंद्रमा को ग्रहण के रूप में शापित करते हैं।

केतु ग्रह – राहु के समान केतु भी पापी ग्रह है। ज्योतिष में इसे किसी भी राशि का स्वामित्व प्राप्त नहीं है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार केतु को तंत्र–मंत्र, मोक्ष, जादू, टोना, घाव, ज्वर और पीड़ा का कारक माना गया है। यदि व्यक्ति की जन्मपत्रिका में केतु अशुभ स्थान पर बैठा हो तो जातक को विभिन्न क्षेत्रों हानि का सामना करना पड़ता है। जबकि केतु यदि कुंडली प्रबल हो तो यह व्यक्ति को सांसारिक दुनिया से दूर ले जाता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति गूढ़ विज्ञान में अधिक रुचि लेता है। मानव शरीर में केतु का स्थान व्यक्ति के कण्ठ से लेकर हृदय तक होता है। राहु–केतु दोनों के प्रभाव से व्यक्ति की कुंडली में अन्य दोष बनते हैं।

सती का शरीर त्याग

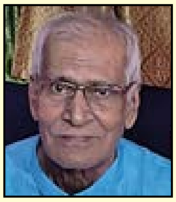

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
स्वतंत्र लेखन
बिहार

ठानी कठिन हठ सती भवानी।
होनी वश प्रबोध नहिं आनी।।
बोली सती सुनो हे स्वामी।
नैहर पिता जज्ञ है ठानी।।
जज्ञ देखने मुझे है जानी।
आज्ञा देहु मुझे हे स्वामी।।
शिव ने बहु भाँती समझाया।
पर भावी वश समझ न आया।।
सब बहनों को पिता बुलाए।
तुम्हें निमंत्रण नहीं पठाए।।
कुशल नहीं है जाने में प्रिय।
हो न जाय कहिं कोई अप्रिय।।
स्त्री हठ तो है कठिन बड़ी।
जाने को नैहर सती अड़ी।।
शिव ने कुछ गण को संग लगा।
सति को तब नैहर दियो पठा।।
जब पहुँची सती पिता घर को।
नहिं कोई मिला नजर भर को।।
पिता सती को देखि क्रुद्ध भए।
सति हृदय जनु बज्रघात भए।।
देखी सती जज्ञभूमी को।
सब देवों का भाग मिला है।।
खोजत चली जज्ञभूमी में।
पर शिव का कहिं भाग नहीं है।।
पति अपमान को देख भवानी।
कुपित भई तब सती भवानी।।
पैहैं दण्ड पिता अति भारी।
अस कहि जोग अगिन तनु जारी।।
हा हा कार मची चहुँ ओरा।
जज्ञ विध्वंस किये शिवछोरा।।

'प्रकृति स्नैहांक्षण'

सच्चिदानंद किरण
भागलपुर, बिहार

प्रकृति प्रदत्त सभी
जड़त्व के मूल में अस्तित्व
की सम्पर्ण आस्था,
व्यवहारिक रूप से हर
मानवीय गुण प्रयाप्त हैं।
उसकी भी मनोदशा होती
उत्थान पतन की,
वह भी सोता जागता है।
आपस में एक दूसरे के
संग अपनी इजहार करता,
सुखांत दू:खांत की व्यथित
स्थिति प्ररिस्थिति की उद्धृत
परिवेश में जब तब
अपनी फरियादी में।
उसकी भी गहरी पैठ है,
पहचान भी आधुनिक नवकृत्रिम
अनुसंधान में राष्ट्रीय अंतर राष्ट्रीय
के संशोधित रूप में।
समस्याओं से गुजरना और
रोग से रोगग्रस्त होना,
ये पर्यावरण की अनुवांक्षिक
प्रभावों के उपर निर्भर।
सीख देता है और लेता भी,
हरी भरी सघन वन प्रांतीय,
ऊंची गगणचुम्बी पर्वतीय ढ़लान,
पताल से जूड़ी अथाह समुद्रीय
उफान,
लम्बी चौड़ी मरूस्थलीय
अनंत क्षितिज को छूती,
जन जीवन को आत्मीय स्नैह
से स्वागत में तैनात।
'प्रकृति प्रदत्त' से निकटस्थ
निजित्व की प्रधानता ही
तो हम आलोकिक परलोकिक की
साक्षात् आध्यात्मीक दर्शन
है प्रशांत जीवन दर्शन में।
'प्रकृति स्नैहांक्षण' में कैसी ?
प्रेताक्षापन वो दिन दूर नहीं,
वो बचेंगे तो हम भी निसंदेह
प्राणोन्नत हो बचेंगे स्वथ्य स्वच्छ
प्राणवायु में हिल मिल
जीवनोंत तक सुखमय आंनंदित
वातावरण में।।